04 - काले एवं भूरे रंगों के बीच बसा अमूर्त रचना संसार

05 - भाजपाः असंभव को संभव करने का नाम

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 06 अप्रैल, 2025

06 - कई सालों से नपा को नहीं मिली प्रतिपूर्ति राशि, आर्थिक स्थिति...

07 - फिल्म के कथानक में गीतों की क्या अहमियत

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 206, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

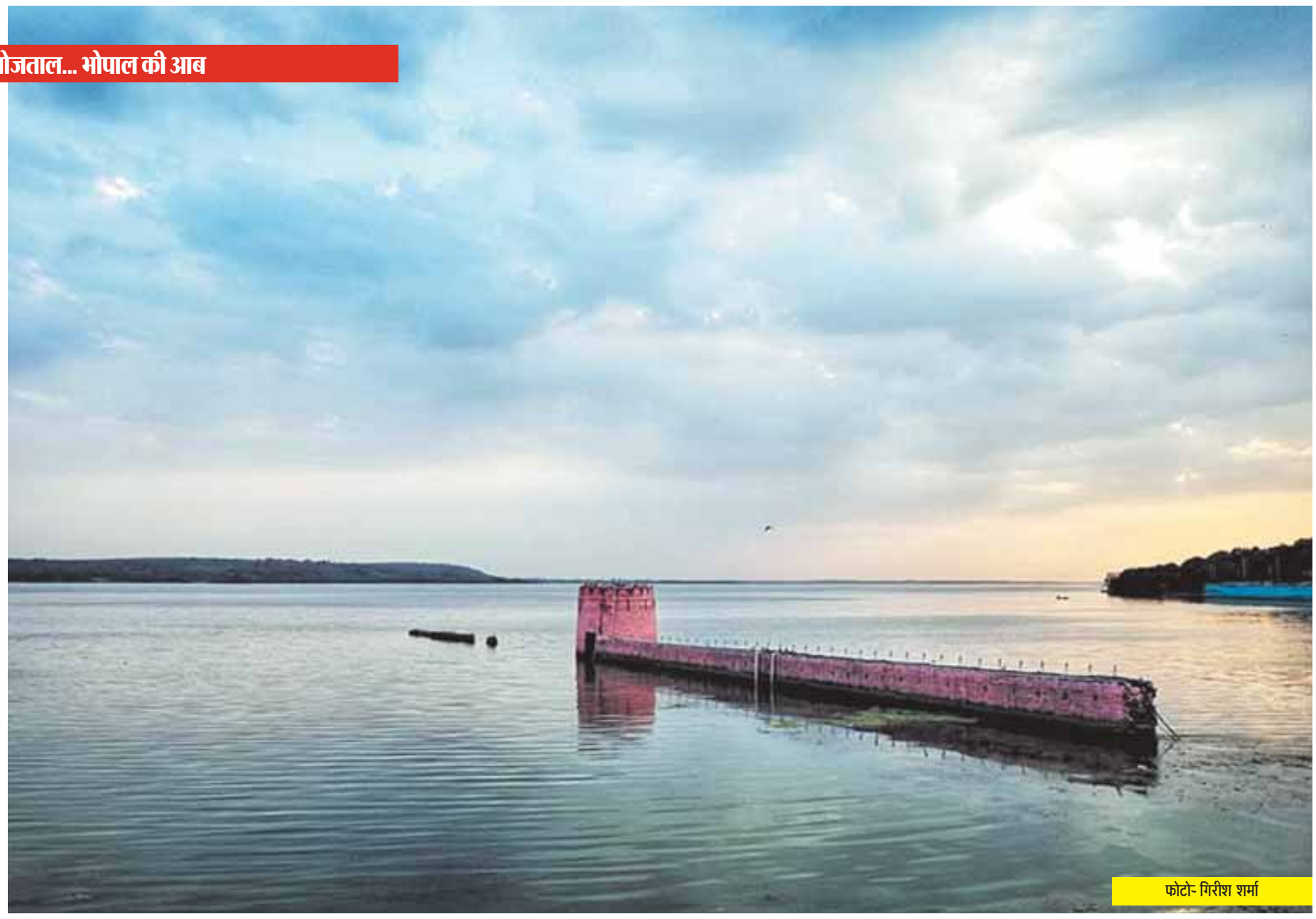
भोजताल... भोपाल की आब

फोटो- गिरीश शर्मा

भारत के खिलाफ नहीं होने देंगे श्रीलंका का इस्तेमाल

● प्रधानमंत्री मोदी के सामने श्रीलंका का भारत से बड़ा वादा

चीन को बहुत बड़ा झटका, हिंद महासागर में खत्म होगी टेंशन

कोलंबो (एजेंसी)। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके ने राजधानी कोलंबो में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आश्वासन दिया है कि उनका देश अपने क्षेत्र का इस्तेमाल ऐसे तरीकों से नहीं होने देगा, जिससे भारत के सुरक्षा हितों को खतरा हो। इस आश्वासन का मकसद क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव के बारे में चिंताओं को दूर करना है। श्रीलंका का ये दावा भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि हिंद महासागर में चीन लगातार घुसपैठ की कोशिश करता रहा है। वो पहले ही श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह को 99 सालों के लिए लीज पर ले चुका है। वहीं भारत की जासूसी के लिए चीन अकसर अपने जासूसी जहाजों को कोलंबो बंदरगाह पर भेजने की कोशिश करता रहा है। लेकिन अब श्रीलंका के राष्ट्रपति का ये वादा भारत के लिए राहत प्रदान करने वाला है। यह बयान एक बैठक के दौरान दिया गया, जिसमें भारत और श्रीलंका के नेता मौजूद थे। इस दौरान ऊर्जा और व्यापार जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों और सहयोग को मजबूत करने पर चर्चा की गई। बैठक के दौरान श्रीलंकन राष्ट्रपति ने कहा कि मैंने श्रीलंका के इस रुख को फिर से दोहराना चाह रहा हूं कि वह अपने भू-क्षेत्र का उपयोग किसी भी ऐसे तरीके से करने की अनुमति नहीं देगा, जो भारत की सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए प्रतिकूल हो। श्रीलंका की अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए वहां चीनी निवेश और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं ने श्रीलंका की संप्रभुता और सुरक्षा मुद्दों से लेकर कई तरह की चिंताएं पैदा की हैं। इसके अलावा चीन श्रीलंका में भारत को काउंटर करने की सोचता रहा है।

हिंदू समाज के सभी पंथ, जाति व समुदाय अब एक साथ आएं

● मोहन भागवत बोले- श्मशान, मंदिर और पानी सब हिंदुओं के लिए एक होना चाहिए ● काशी में बाबा विश्वनाथ के किए दर्शन, बीएचयू के छात्रों से पूछा- संघ क्या है

वाराणसी (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत शनिवार सुबह काशी विश्वनाथ मंदिर पहुंचे। यहां उन्होंने विधि-विधान से 15 मिनट मंत्रोच्चार के बीच बाबा का दर्शन-पूजन और अभिषेक किया। मंदिर न्यास के पदाधिकारियों के साथ भागवत ने बाबा धाम की भव्यता देखी। उन्हें धाम में चल रही सभी व्यवस्थाओं के बारे में बताया। आज संघ प्रमुख काशी के प्रबुद्धजनों से मुलाकात करेंगे। उनके साथ संघ के विस्तार पर चर्चा करेंगे। वहीं, शुक्रवार शाम मोहन भागवत ने बीएचयू आईआईटी के छात्रों को हिंदुत्व का पाठ पढ़ाया। कहा- हिंदू समाज के सभी पंथ, जाति, समुदाय साथ आएं। श्मशान, मंदिर और पानी सब हिंदुओं के लिए एक होना चाहिए। शुक्रवार को संघ प्रमुख बीएचयू आईआईटी के जिमखाना मैदान में 70 मिनट तक रहे। उन्होंने बीएचयू के 100 से ज्यादा छात्रों का योग, खेल और वैदिक मंत्रों का उच्चारण देखा। छात्र उन्हें देख कर जय बजरंगी, भारत माता की जय और वंदे मातरम् का उद्घोष करते दिखे। भागवत ने छात्रों से पूछा- क्या आप संघ को समझते हैं, बताइए संघ क्या है। छात्रों ने कहा- संघ का मतलब हिंदुत्व को बढ़ावा देना।

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

समय-शिला पर सूर्य-रश्मि से
लिखा तुम्हारा नाम
जग कहता,
धरती की धड़कन
हम कहते हैं राम।

वामन से विराट तक सबका
जो है पालनहार
करुणासागर आर्तजनों का
दुखियों के आधार
मर्यादा की शिखर कल्पना
पाती जहाँ विराम।

सत्य, न्याय तप धर्म सनातन
के मृण्मय आदर्श
तुम हे श्रेष्ठ धनुर्धर , तुमसे
दीपित भारतवर्ष
पाकर मृदु संस्पर्श,
बन गया
दंडकवन भी धाम।

मानवता के मानसरोवर के
स्वर्णिम जलजात
शुचिता की अंतिम जीवित
परिभाषा तुम हो तात
सारी पृथ्वी रामायण से
सर्जित विश्वग्राम।

– बुद्धिनाथ मिश्र

दिल्ली से श्रीनगर पहुंचकर कटरा में बदलनी होगी ट्रेन

● सुरक्षा कारणों से वंदे भारत के यात्रियों की आईडी जांच होगी

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर को शेष भारत से जोड़ने वाली पहली वंदे भारत एक्सप्रेस 19 अप्रैल से कटरा स्टेशन से चलेगी। इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हरी झंडी दिखाने जा रहे हैं। यह इस महत्वाकांक्षी रेल प्रोजेक्ट का पहला चरण है। दूसरे चरण में ट्रेन नई दिल्ली से श्रीनगर के बीच चलेगी। रेलवे इसे अगस्त या सितंबर में चलाने की तैयारी कर रहा है। हालांकि, नई दिल्ली से सीधे श्रीनगर एक भी ट्रेन नहीं जाएगी। नॉर्दर्न रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि टिकट नई दिल्ली से श्रीनगर तक का बनेगा, लेकिन यात्रियों को कटरा पहुंचने के बाद ट्रेन बदलनी पड़ेगी। यहीं उनकी सुरक्षा जांच होगी। इस प्रक्रिया में 2-3 घंटे लग सकते हैं। इसके लिए कटरा स्टेशन पर अलग लाउंज बना रहे हैं। यह स्टेशन से बाहर होगा। यात्रियों को प्लेटफार्म पर उतरने के बाद बाहर आना होगा। फिर लाउंज में सुरक्षा जांच, आईडी सत्यापन, सामान की स्कैनिंग होगी।

वक्फ बिल समर्थन पर शाहनवाज हुसैन को मारने की धमकी

पटना (एजेंसी)। वक्फ बिल का समर्थन करने के बाद के बीजेपी सीनियर लीडर और पूर्व मंत्री शाहनवाज हुसैन को धमकियां मिल रही हैं। उन्हें फोन कर जान से मारने की धमकी दी जा रही है। सोशल मीडिया पर भी धमकाया जा रहा है। शाहनवाज ने कहा, वो ऐसी धमकियों से डरने वाले नहीं हैं। गालियों से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है। उन्होंने कहा- मैं सच्ची बात करता हूं। सीएए पर तब चीख-चीखकर मैं कहता था कि यह बिल मुसलमानों के अहित में नहीं है, लेकिन तब कितना बड़ा धरना हुआ। दरअसल, लोकसभा और राज्यसभा में वक्फ संशोधन बिल पास होने के बाद शाहनवाज ने फेसबुक पर एक पोस्ट जरिए देशवासियों को बधाई दी थी। उनके पोस्ट के बाद सोशल मीडिया पर कुछ लोग उनके खिलाफ कमेंट करने लगे। धमकी मिलने के बाद बीजेपी नेता ने शनिवार को समस्तीपुर में प्रेस कॉन्फ्रेंस की।

दिल्ली के लाल किले पर होगा 3 दिवसीय विक्रमादित्य महानाट्य का मंचन : मुख्यमंत्री

सम्राट विक्रमादित्य का शासन काल सुशासन व्यवस्था का प्रस्तुत करता है आदर्श उदाहरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अतीत के गौरवशाली इतिहास को जन सामान्य के सामने लाने के लिये 2 हजार वर्ष पहले सम्राट विक्रमादित्य द्वारा सुशासन के सिद्धांतों पर स्थापित शासन संचालन व्यवस्था और उनकी कीर्ति पर केन्द्रित महानाट्य की प्रस्तुति दिल्ली के लाल किले पर 12-13-14 अप्रैल को होने जा रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का ध्येय वाक्य 'विरासत से विकास की ओर' हमारे लिए एक पाथेय की तरह सिद्ध हो रहा है। हम विकास कार्यों में विरासत को महत्वपूर्ण स्थान दे रहे हैं। मध्यप्रदेश सरकार सुशासन को ध्यान में रखते हुए विकास और जनकल्याण की सभी गतिविधियां संचालित कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को नई दिल्ली में विक्रमोत्सव अंतर्गत सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य के महामंचन के संबंध में पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे।

● विक्रमादित्य द्वारा किये गये नवाचार और कार्य आज भी हैं प्रासंगिक

● 2000 साल पहले सम्राट विक्रमादित्य ने की थी गणतंत्र की स्थापना

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य के विराट व्यक्तित्व को सबके सामने लाने के लिए महानाट्य की कल्पना की गई है। उन्होंने कहा कि जब इसका मंचन दिल्ली में 12, 13 और 14 अप्रैल को लाल किले पर होगा तो इसमें हाथी, घोड़ों, पालकी के साथ 250 से ज्यादा कलाकार अभिनय करते नजर आएंगे। महानाट्य में शामिल कलाकार निजी जीवन में अलग-अलग क्षेत्र के प्रोफेशनल्स हैं। महानाट्य में वीर रस समेत सभी रस देखने को मिलेंगे। महानाट्य का मंचन गौरवशाली इतिहास को विश्व के सामने लाने का मध्यप्रदेश सरकार का एक अभिनव प्रयास है। इस कालजयी रचना को सबके सामने रखने में दिल्ली सरकार का भी सहयोग मिल रहा है। इससे पहले हैदराबाद में भी विक्रमादित्य महानाट्य की प्रस्तुति हो चुकी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य का शासन काल, सुशासन व्यवस्था का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। वे एकमात्र ऐसे शासक थे, जिनके जीवन के विविध प्रसंगों से आज भी लोग प्रेरणा लेते हैं। उनके द्वारा किए गए कार्य और नवाचार आज भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान में हिजरी और विक्रम संवत प्रचलन में हैं। इसमें विक्रम संवत उदार परंपरा को लेकर चलने वाला संवत है, अर्थात संवत चलाने वाले के लिए शर्त है कि जिसके पास पूरी प्रजा का कर्ज चुकाने का सामर्थ्य हो, वही संवत प्रारंभ कर सकता है। सम्राट विक्रमादित्य ने अपने सुशासन, व्यापार-व्यवसाय को प्रोत्साहन और दूरदृष्टि से यह संभव किया विक्रमादित्य ने विदेशी शक आक्रांताओं को पराजित कर विक्रम सम्वत् का प्रारंभ 57 ईस्वी पूर्व में किया था। विक्रम संवत के 60 अलग-अलग प्रकार के नाम हैं। संवत 2082 को धार्मिक अनुष्ठानों के संकल्प में 'सिद्धार्थ' नाम दिया गया है। ये 60 नाम चक्रीकरण में बदलते रहते है। विक्रमादित्य का न्याय देश और दुनिया में प्रचारित हुआ। यह सम्वत् भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आधार वाला कालगणना सम्वत् बन गया, जो आज भी प्रचलित है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 06 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

स्थापना दिवस पर विशेष

मनोज कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भाजपा: शून्य से शिखर का सफर

भारतीय जनता पार्टी की यात्रा का आरंभ कहां से शुरू होता है. वैसे तो यह सबको पता है कि 6 अप्रैल 1980 को भाजपा का एक राजनीतिक पार्टी के रूप में गठन हुआ लेकिन भाजपा की रीति–नीति हिन्दुत्व की रही है और इसी आधार पर तब 1951 में हिंदू समर्थक समूह की राजनीतिक शाखा के रूप में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने नींव डाला था. ध्येय था हिंदू संस्कृति के अनुसार भारत के पुनर्निर्माण की वकालत की और एक मजबूत एकीकृत राज्य के गठन का आह्वान। यात्रा आहिस्ता आहिस्ता आगे बढने् लगा और 1967 तक भारतीय जनसंघ ने उत्तर भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों में अपनी मजबूत पकड़ बना ली थी। दस साल बाद, पार्टी ने हिंदी भाषी क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत कर ली।

व्यक्ति या संस्था जब शिखर पर होता है तब उसकी विजयगाथा गायी जाती है और यह स्वाभाविक भी है. आज की भारतीय जनता पार्टी की बुनियाद में उसके संघर्ष के दिनों की यात्रा उसकी नींव है. 1951 में जनसंघ के रूप में यात्रा शुरू हुई और जनता पार्टी के रूप में विस्तार मिला और 6 अप्रेल 1980 को स्वयं की पहचान के साथ भारतीय जनता पार्टी की यात्रा आरंभ हुई तो अविरल चल रही है. कभी दो सांसदों के साथ लोकसभा में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराने वाली भारतीय जनता पार्टी आज देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में उपस्थित है।

यहां यह जान लेना जरूरी है कि भारतीय जनता पार्टी की यात्रा का आरंभ कहां से शुरू होता है. वैसे तो यह सबको पता है कि 6 अप्रेल 1980 को भाजपा का एक राजनीतिक पार्टी के रूप में गठन हुआ लेकिन भाजपा की रीति-नीति हिन्दुत्व की रही है और इसी आधार पर तब 1951 में हिंदू समर्थक समूह की राजनीतिक शाखा के रूप में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने नींव डाला था. ध्येय था हिंदू संस्कृति के अनुसार भारत के पुनर्निर्माण की वकालत की और एक मजबूत एकीकृत राज्य के गठन का आह्वान। यात्रा आहिस्ता आहिस्ता आगे बढने् लगा और 1967 तक भारतीय जनसंघ ने उत्तर भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों में अपनी मजबूत पकड़ बना ली थी। दस साल बाद, पार्टी ने हिंदी भाषी क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत कर ली।

देश में 1977 में आपातकाल की समाप्ति के बाद जनसंघ का अन्य दलों के साथ विलय हो गया और इसके साथ ही जनसंघ के स्थान पर नया नाम मिला जनता पार्टी. जनता पार्टी के गठन के बाद नयी ताकत दिखी और जनता पार्टी ने 1977 में कांग्रेस को पराजित कर दिया. जनता पार्टी में विलय हुई जनता पार्टी की रीति-नीति से अन्य दलों का मेल नहीं खाया और उनके रास्ते अलग अलग हो गए. पूर्व जनसंघ के पदचिह्नों को पुनर्संयोजित करते हुये अटल बिहारी वाजपेयी ने तीन अन्य राजनीतिक दलों के साथ मिलकर भारतीय जनता पार्टी का गठन किया। जनता पार्टी से अलग होकर सरकार की बागडोर अपने हाथ में ले ली। हालांकि, गुटबाजी और आंतरिक विवादों से त्रस्त होकर जुलाई 1979 में सरकार गिर गई। जनता गठबंधन के भीतर असंतुष्टों द्वारा विभाजन के बाद 1980 में औपचारिक रूप से भाजपा की स्थापना हुई।

यद्यपि शुरुआत में पार्टी असफल रही और 1984 के आम चुनावों में केवल दो लोकसभा सीटें जीतने में सफल रही। इसके बाद राम जन्मभूमि आंदोलन ने पार्टी को ताकत दी। कुछ राज्यों में चुनाव जीतते हुये और राष्ट्रीय चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करते हुये 1996 में पार्टी भारतीय संसद में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। इसे सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया गया जो 13 दिन चली। 1998 में आम चुनावों के बाद भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का निर्माण हुआ और अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार बनी जो एक वर्ष तक चली। इसके बाद आम-चुनावों में राजग को पुनः पूर्ण बहुमत मिला और अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार ने अपना कार्यकाल पूर्ण किया। इस प्रकार पूर्ण कार्यकाल करने वाली पहली गैर कांग्रेसी सरकार बनी। 2004 के आम चुनाव में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा और अगले 10 वर्षों तक भाजपा ने संसद में मुख्य विपक्षी दल की भूमिका निभाई।

उल्लेखनीय है कि भाजपा हिन्दुत्व के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करती है और नीतियाँ ऐतिहासिक रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद की पक्षधर रही हैं। इसकी विदेश नीति राष्ट्रवादी सिद्धांतों पर केन्द्रित है। जम्मू और कश्मीर के लिए विशेष संवैधानिक दर्जा खत्म करना, अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण करना तथा सभी भारतीयों के लिए समान नागरिकता कानून का कार्यान्वयन करना भाजपा के मुख्य मुद्दे हैं।

भाजपा को 1989 में चुनावी सफलता मिलनी शुरू हुई, जब उसने अयोध्या में हिंदुओं द्वारा पवित्र माने जाने वाले एक क्षेत्र में हिंदू मंदिर के निर्माण की मांग करके मुस्लिम विरोधी भावना को भुनाया , लेकिन उस समय बाबरी मस्जिद (बाबर की मस्जिद) का कब्जा था। 1991 तक भाजपा ने अपनी राजनीतिक अपील में काफी वृद्धि की थी, लोकसभा (भारतीय संसद के निचले सदन) में 117 सीटों पर कब्जा कर लिया और चार राज्यों में सत्ता संभाली। 1998 में भाजपा और उसके सहयोगी दल वाजपेयी के प्रधानमंत्री बनने के साथ बहुमत वाली सरकार बनाने में सफल रहे। उस वर्ष मई में, वाजपेयी द्वारा आदेशित परमाणु हथियार परीक्षणों की व्यापक अंतरराष्ट्रीय निंदा हुई। 13 महीने के कार्यकाल के बाद, गठबंधन सहयोगी ऑल इंडिया द्रविड़ प्रोग्रेसिव फेडरेशन (अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम) ने अपना समर्थन वापस ले लिया और वाजपेयी को लोकसभा में विश्वास मत हासिल करने के लिए बाध्य होना पड़ा, जिसमें वे एक वोट के अंतर से हार गये।

भाजपा ने 1999 के संसदीय चुनावों में एनडीए के आयोजक के रूप में चुनाव लड़ा, जो 20 से अधिक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों का गठबंधन था। गठबंधन ने सत्तारूढ़ बहुमत हासिल किया, जिसमें भाजपा ने गठबंधन की 294 सीटों में से 182 सीटें जीतीं। गठबंधन में सबसे बड़ी पार्टी के नेता के रूप में वाजपेयी फिर से प्रधानमंत्री चुने गए। हालाँकि वाजपेयी ने कश्मीर क्षेत्र को लेकर पाकिस्तान के साथ देश के लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष को सुलझाने और भारत को सूचना प्रौद्योगिकी में विश्व नेता बनाने की कोशिश की, लेकिन गठबंधन ने 2004 के संसदीय चुनावों में कांग्रेस पार्टी के संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) गठबंधन के सामने अपना बहुमत खो दिया और वाजपेयी ने पद से इस्तीफा दे दिया। 2009 के संसदीय चुनावों में लोकसभा में पार्टी की सीटों का हिस्सा 137 से घटकर 116 रह गया क्योंकि यूपीए गठबंधन फिर से प्रबल हो गया ।

2014 के आम चुनावों में राजग को गुजरात के लम्बे समय से चले आ रहे मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारी जीत मिली। 2014 के लोकसभा चुनाव कांग्रेस शासन के प्रति असंतोष बढना् था. मोदी को भाजपा के चुनावी अभियान का नेतृत्व करने के लिए चुना गया. उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार पार्टी ने घोषित किया। भाजपा ने 282 सीटें जीतीं, जो सदन में स्पष्ट बहुमत था, और इसके एनडीए सहयोगियों ने 54 और सीटें जीतीं। मोदी ने 26 मई, 2014 को प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली.

दो सीटों पर विजय प्राप्त करने वाली भाजपा ने 2014 से जो विजय यात्रा आरंभ की तो पीछे पलट कर नहीं देखा. लोकसभा के साथ ज्यादतर राज्यों में भाजपा की सरकार बनती गई. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आइकॉन बनकर उभरे. वे समाज के सभी वर्गों में लोकप्रिय हो गए. वे अपने सख्त फैसले से अलग पहचान बना लिया. अयोध्या में राममंदिर निर्माण, जम्मू कश्मीर में बदलाव, तीन तलाक कानून खत्म करने, गोवध रोकने कानून, जीएसटी लागू कर देश में परिवर्तन की नयी बयार ला दी. भाजपा को बनाने और विस्तार देने में अटलविहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवानी और मुरली मनोहर जोशी का नाम लिया जा सकता है तो एक दशक में भाजपा को मजबूती देने वालों में नरेन्द्र मोदी के नाम का ही उल्लेख मिलेगा. भाजपा ने अपने संकल्प और दूरदृष्टि से आज वैकल्पिक नहीं बल्कि लोकतांत्रिक भारत में मुखर और प्रखर राजनीतिक दल के रूप में सशक्त उपस्थिति दर्ज करायी है।

वक्फ के नाम पर कब्जे वाली जमीनें जल्द लेंगे वापस -योगी

महाराजगंज (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संसद से पास हो चुके वक्फ संशोधन अधिनियम को लेकर आगे का प्लान भी शनिवार को बता दिया। महाराजगंज में योगी ने कहा कि लाखों एकड़ जमीन वक्फ बोर्ड के नाम पर कब्जा किए जाने का काम किया गया था। चंद लोगों का लूट का माध्यम बन गया था। जिस पर अब पूरी तरह से लगाम लगेगी। इन जमीनों को वापस लिया जाएगा। अब वक्फ बोर्ड की जमीन पर कोई डकैती नहीं डाल पाएगा। चौराहों की जमीनों पर कोई कब्जा नहीं कर सकता है। जो भी सार्वजनिक जमीन होगी उनको विद्यालय, चिकित्सालय, कॉलेज एवं मेडिकल कॉलेज बनाने के काम में लिया जाएगा। सीएम योगी महाराजगंज में नौतनवा ब्लाक के रतनपुर में डेढ़ सौ करोड़ की लागत से बने रोहिन बैराज का लोकार्पण करने के बाद लोगों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पिछली सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा कि लंबे वर्षों तक उत्तर प्रदेश की कमान संभालने वाली सरकारों के पास अपना पेट भरने से ही फुर्सत नहीं थी। मुख्यमंत्री ने साढ़े छह सौ करोड़ रुपए की परियोजनाओं का लोकार्पण किया।

जयंत चौधरी की पार्टी में बगावत, महासचिव का इस्तीफा

मुजफ्फरनगर (एजेंसी)। बिहार के बाद अब यूपी में वक्फ बिल को लेकर बगावत शुरू हो गई है। शुक्रवार को राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश महासचिव शाहजेब रिजवी ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने वीडियो जारी कर पार्टी प्रमुख और केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी पर गंभीर आरोप लगाए। रिजवी ने कहा, जयंत चौधरी भटक चुके हैं। जिस पार्टी को मुसलमान मुख्य धारा में लेकर आए, झोली भर–भर के वोट दिया। वही पार्टी ने आज मुसलमानों के खिलाफ बन रहे कानून में अपनी सहमति जताई है। जयंत चौधरी ने मुसलमानों के साथ विश्वासघात किया। शाहजेब रिजवी के अलावा हापुड़ में जिला महासचिव मोहम्मद जकी ने भी इस्तीफा दिया है। पश्चिमी यूपी में मुसलमान आपको अपनी आंखों का तारा समझ बैठा था। इस इलाके में आपके 10 विधायक बने हैं। इनमें कोई ऐसी सीट नहीं है, जहां मुसलमानों का अच्छा वोट बैंक न हो। मुसलमानों ने एकतरफा आपको वोट दिया।

दुनिया भर में बस्तर पंडुम को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाएंगे

● अमित शाह बोले- नक्सली सरेंडर करें, तभी बन पाएगी आगे की बात ● अगले चैत्र-नवरात्रि तक लाल आतंक खत्म हो जाएगा

दंतेवाड़ा (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने दंतेवाड़ा में कहा कि अगले चैत्र नवरात्रि तक लाल आतंक खत्म हो जाएगा। बस्तर से नक्सलवाद खत्म होने के कगार पर है। नक्सलियों से अपील है कि वो सरेंडर करें। लोगों से कहा नक्सलियों को सरेंडर कराकर गांवों को नक्सल मुक्त बनाइए। हर गांव को एक करोड़ मिलेगा। शाह ने कहा कि बस्तर पंडुम को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाएंगे।

कांग्रेस ने 75 साल तक गरीबी हटाओ का नारा लगाया। पीएम मोदी ने करोड़ों लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला। करोड़ों गरीबों को फ्री राशन मिल रहा है। नक्सलियों से फिर कहा कि किसी को कोई मारना नहीं चाहता, नक्सली सरेंडर करें। भारत सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार संरक्षण देगी। इससे पहले मंच पर पहुंचने पर सीएम साय ने उन्हें गौर मुकुट पहनाकर स्वागत किया। उन्हें कोंडागांव का प्रसिद्ध ढोकरा आर्ट भेंट किया। अमित शाह ने कहा कि मैं अभी-अभी मां दंतेश्वरी मंदिर में दर्शन करके आया हूं। माता से आशीर्वाद लेकर आया हूं कि अगले चैत्र नवरात्र तक लाल आतंक का सफाया हो जाएगा। अगले साल बस्तर पंडुम के नाम से आयोजन होगा। जिसमें देश के हर एक कोने से आदिवासी समुदाय के लोग, जनजाति के लोग यहां पहुंचेंगे।

● **जहां गोली की आवाज आती थी, वहां स्कूल की घंटी सुनाई देती है–** सीएम विष्णुदेव साय ने कहा कि, माता की पूजा कर संकल्प लिया है कि नक्सलवाद को खत्म करना है। 15 महीने से सरकार में हैं। डबल इंजन की सरकार है। गृहमंत्री के मार्गदर्शन में सुरक्षाबल के जवान नक्सलियों से लड़ाई लड़ रहे हैं। नक्सली जब समाप्त हो जाएंगे तब देश–दुनिया के लोग यहां आएंगे। ओडिशा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, समेत अन्य राज्यों के 27 हजार कलाकार बस्तर पंडुम में शामिल हुए हैं। हम मोदी की गारंटी पूरी कर रहे हैं। विशेष पिछड़ी जनजाति के लोग हैं उनके लिए पीएम जनमन योजना की शुरुआत की है। जिसके लिए सड़क बिजली पानी सब उन लोगों तक पहुंच रही है। जहां भी सुरक्षा कैंप खुले हैं जहां पहले गोलियों की आवाज आती थी वहां अब स्कूल की घण्टियों की आवाज आ रही है।

कुणाल कामरा फिर मुंबई पुलिस के सामने नहीं हुए पेश

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे पर पैरोडी सॉन्ग मामले में कॉमेडियन कुणाल कामरा शनिवार को भी मुंबई पुलिस के सामने पेश नहीं हुए। यह तीसरी बार है जब कामरा ने पुलिस द्वारा भेजे गए समन का पालन नहीं किया। इससे पहले पुलिस ने कामरा को दो समन भेजे थे। उधर, कुणाल कामरा को बड़ा झटका लगा है। काम देने वाली एजेंसी ने भी शनिवार को उनसे जुड़ा सारा कंटेंट हटा दिया है। इतना ही नहीं अपनी वेबसाइट से आर्टिस्ट्स लिस्ट से भी उनका नाम हटा दिया है। दरअसल, शिवसेना नेता राहुल कनाल ने 3 अप्रैल को बुक माय शो को एक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने अनुराध किया था कि वे कुणाल कामरा को उनके आगे के शो के लिए टिकट प्लेटफॉर्म उपलब्ध न कराएं। कुणाल कामरा 1 अप्रैल को मद्रास हाईकोर्ट में पेश हुए थे।

वक्फ की संपत्ति पर गैर-मुस्लिमों का भी है हक

● बिहार गवर्नर बोले- पटना में वक्फ की कई संपत्तियां

अब तक एक भी अनाथालय-अस्पताल नहीं खुला

पटना (एजेंसी)। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने लोकसभा और राज्यसभा से पास हुए वक्फ संशोधन बिल का समर्थन किया है। उन्होंने कहा- वक्फ की संपत्तियां अल्लाह की मानी जाती हैं। इसका इस्तेमाल गरीबों, जरूरतमंदों और जनहित के लिए होना चाहिए। गैर मुस्लिमों का भी वक्फ की संपत्तियों में बराबर का हक है। राज्यपाल ने कहा कि, भारत लोकतांत्रिक देश है। प्रोटेस्ट करने का अधिकार है। हर किसी को अपनी बात रखने का अधिकार है। जब मैं यूपी में मंत्री था तब वक्फ विभाग मेरे पास ही था। हर समय मुझे ऐसे लोगों से मिलना पड़ता था, जिनके संपत्ति के मामले चल रहे थे। गवर्नर ने कहा कि इसमें बहुत सुधार की जरूरत थी। यह वक्फ संशोधन विधेयक इसी दिशा में एक कदम है। गर्वनर पटना में पूर्व उप प्रधानमंत्री जगजीवन राम की 118वीं जयंती पर राजकीय समारोह में पहुंचे थे।

मोदी और यूनुस की मुलाकात के पीछे अदृश्य ताकत का हाथ

● न-न करते हुए भी भारत ने कर ली बात, रिपोर्ट में बड़ा खुलासा

ढाका (एजेंसी)। बैंकॉक में बिम्सटेक सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक मुलाकात खूब सुर्खियों में रही। यह मुलाकात बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस के साथ हुई। बीते साल

बांग्लादेश में हिंसक प्रदर्शन के बाद यह दोनों देशों के शीर्ष नेताओं की पहली मुलाकात है। इस मुलाकात के बाद सुधार की उम्मीद लगाई जा रही है। इस बीच एक चर्चा यह चल रही है कि भारतीय पक्ष इस मुलाकात के लिए एक तीसरी ताकत के कहने पर तैयार हुआ है। इसकी चर्चा अनायास ही नहीं है।

अन्नामलाई बोले-मैं, प्रदेश अध्यक्ष पद की दौड़ में नहीं

● तमिलनाडु में भाजपा का नेतृत्व परिवर्तन बहुत जल्द होगा

मुंबई (एजेंसी)। तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष के अन्नामलाई ने शुक्रवार को कहा कि वे तमिलनाडु के नए प्रदेश अध्यक्ष की दौड़ में नहीं हैं। उन्होंने कहा- भाजपा में आंतरिक प्रतिस्पर्धा के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि अध्यक्ष का चयन सर्वसम्मति से होता है। कोयंबटूर में मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा- भाजपा को आने वाले समय में अच्छा प्रदर्शन करना चाहिए। हम नए अध्यक्ष के चुनाव के समय इस पर बात करेंगे। राज्य में नेतृत्व परिवर्तन जल्द ही हो सकता है। उनसे सवाल किया गया कि वे अध्यक्ष पद की दौड़ में क्यों नहीं हैं। इसके जबाव में उन्होंने कहा- प्रतियोगिता की गुंजाइश कहां है। भाजपा ऐसे पदों के लिए आंतरिक प्रतियोगिता नहीं करती। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अन्नामलाई अध्यक्ष पद से

इस्तीफा दे चुके हैं, लेकिन न अन्नामलाई औ न भाजपा किसी ने इसकी पुष्टि नहीं की है। भाजपा ने 9 जुलाई 2021 को अन्नामलाई को प्रदेश अध्यक्ष बनाया था।

मैतेई और कुकी पक्षों के बीच शांतिवार्ता की पेशकश

● मणिपुर में बदल रहे हैं हालात, दिल्ली में मिले दोनों पक्ष ● एससी जज दौरे पर गए थे, राहत शिविरों की हालत खराब

इंफाल (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के जजों को मणिपुर से वापस आए 15 दिन बीत चुके है, लेकिन राहत शिविरों में रह रहे 50 हजार से ज्यादा विस्थापितों की जिंदगी अब भी वैसी ही है। टीम ने जातीय हिंसा के विस्थापितों से मुलाकात की और राहत शिविरों का दौरा किया था। जस्टिस कोटिश्वर सिंह ने मणिपुर के समृद्ध होने की बात कही थी। प्रतिनिधिमंडल में जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस एमएम सुंदरेश, जस्टिस केवी विश्वनाथन और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह शामिल थे। दौरे के समय सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस बीआर गवई ने संवैधानिक तरीकों से सभी समस्याओं का समाधान करने की बात कही थी। उन्होंने कहा था जब संवाद होता है तो समाधान आसानी से मिल जाता है। इसके बाद बड़े

बदलाव की उम्मीद की जा रही थी। अब मैतेई और कुकी समुदाय के बीच शांति का रास्ता निकालने की एक पहल हुई है। मैतेइयों के प्रमुख संगठन कोऑर्डिनेटिंग कमेटी ऑन मणिपुर इंटीग्रिटी (कोकोमी) के एक नेता ने बताया कि शांति के लिए दोनों पक्षों को बातचीत करनी होगी। थादोऊ कुकी जनजाति के कुछ लोगों ने बातचीत की पेशकश की है। कोकोमी के लोग अब अगले हफ्ते में हर मैतेई के घर जाकर इस संबंध में बात करेंगे। सभी लोगों की जो राय होगी, वही अंतिम निर्णय होगा। हालांकि, कुकी नेताओं का कहना है कि थादोऊ जनजाति के लोग दिल्ली में बैठकर मैतेइयों से बातचीत की पेशकश कर रहे हैं, उन्हें मणिपुर के कुकी संगठनों का समर्थन नहीं मिलेगा।

● **राहत शिविरों की स्थिति बदतर, मरीजों को समय पर इलाज नहीं मिल रहा–** हिंसा के बीच राहत शिविरों की स्थिति बदतर है, मरीजों को समय पर इलाज मिलने के कारण उनकी मौत हो रही है। स्थानीय के अनुसार जजों के दौरे के बाद क्या योजना बनीं इसकी कोई भी सूचना शिविरों में रह रहे लोगों को नहीं दी गई है। चूराचांदपुर के 50 राहत शिविरों में करीब 8 हजार लोग रह रहे हैं, जिनमें कई बीमार हैं। मरीजों को देख रहे एक डॉक्टर बताया कि सरकारी अस्पताल में दवाएं खत्म हो चुकी हैं। यही हाल इंफाल का भी है। जस्टिस गवई ने कहा था– हमारी नैतिक और संवैधानिक जिम्मेदारी है कि विस्थापित लोग हमसे पीछे न छूटें। उनकी आईडेंटिटी, डॉक्यूमेंट्स, संपत्ति का अधिकार या फिर मुआवजे के मामलों में पूरा अधिकार प्राप्त हो। उन्होंने विस्थापित समुदायों के भीतर स्थापित कानूनी सहायता क्लिनिक से मुफ्त कानूनी सहायता देने की बात कही थी।

परिक्रमा

देनदारियां चुकाने का दावा करते डॉ. मोहन यादव

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दावा किया है कि बीते वित्तीय वर्ष में उनकी सरकार ने आठ साल पुरानी देनदारियां चुकाई हैं। उनका कहना है कि यह सब कुशल वित्तीय प्रबंधन से संभव हो पाया है। अब हम विकास के साथ औद्योगिक गतिविधियां और जन-हितैषी कामों की दृष्टि से आगे बढ़ रहे हैं। मुख्यमंत्री का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश में डबल इंजन की सरकार जनहितैषी संकल्पों के साथ आगे बढ़ रही है। इन दिनों मोहन यादव फुलफार्म में हैं और जहां भी मौका मिलता है अफसरों की खिंचाई करने से नहीं चूकते। उन्होंने कहा है कि प्रदेश का कोई भी स्कूल जर्जर हालत में न रहे, समय रहते उसे ठीक करें। वहीं दूसरी ओर राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने सवाल किया है कि मुख्यमंत्री जनता को बतायें कि प्रदेश कब और कैसे कर्जमुक्त हो गया। वित्तमंत्री ने बजट में 4 करोड़ 21 लाख रुपये का कर्ज बताया था। सरकार लगातार कर्ज ले रही है ऐसे में एक महीने में सभी देनदारियां चुकाने की बात आश्चर्य की बात है और यह स्पष्ट होना चाहिये कि प्रदेश कर्जमुक्त कैसे हुआ।

डॉ. मोहन यादव का कहना है कि बजट में कोई नया टेक्स नहीं लगाया गया है फिर भी इसमें 16 प्रतिशत की वृद्धि की गयी है। सरकारी कर्मचारियों के हित में लगभग दस-पन्द्रह साल तक के पुराने भत्तों की राशि बढ़ाने का निर्णय लिया गया है जिससे 1500 करोड़ रुपये का लाभ कर्मचारियों को मिलेगा। एमएसएमई और हैवी इंडस्ट्रीज सहित सभी प्रकार की इकाइयों को एक वर्ष में 5225 करोड़ रुपए की राशि देने का भी काम किया गया है। शिक्षा नीति 2020 का अक्षरश = पालन करने का उन्होंने निर्देश दिया है, बोर्ड के परीक्षा परिणाम समय पर घोषित करने को भी कहा है। उन्होंने कहा कि हर जिले में पीपीपी मॉडल पर नर्सरियां विकसित की जायेंगी, उद्यानिकी तथा प्रसंस्करण विभाग की नर्सरियों में यह मॉडल लागू होगा, विश्वविद्यालयों और शासकीय विभागों की खाली जमीनों पर उद्यान विकसित किए जायेंगे। नीमच और मंदसौर में औषधि कृषि के लिए उद्यानिकी इंडस्ट्री कान्क्लेव होगा। आगामी पांच वर्ष में 33 लाख 91 हजार हेक्टेयर तक उद्यानिकी फसल का लक्ष्य रखा गया है।

जिलाध्यक्षों को शक्तिशाली करेगी कांग्रेस

'सब कुछ लुटाकर होश में आए तो क्या हुआ।' लेकिन देर आए दुरुस्त आए की कहावत को चरितार्थ करती हुई कांग्रेस आज नजर आ रही है, अब कितना कर पायेगी यह तो आने वाला समय ही बतायेगा, लेकिन कोशिश प्रारम्भ की जा रही है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की पाठशाला में दिल्ली में शामिल होकर लौटे प्रदेश कांग्रेस के नेता इन दिनों फुलफार्म में हैं। देखने वाली बात यही होगी कि इस फार्म में वे कितने दिनों तक रहते हैं। कांग्रेस में अब जिलाध्यक्षों के अधिकार बढ़ाये जायेंगे और उन्हें ज्यादा पावरफुल किया जायेगा। यदि उनकी जिम्मेदारियों बढ़ेगी तो उन्हें अपनी सक्रियता भी बढ़ाना होगी और उन पर निगरानी रखने का तंत्र भी तेज गति पकड़ेगा । गांव-गांव तक कांग्रेस संगठन नए सिरे से बनाया जायेगा तथा ग्राम कमेटियां गठित होगीं। शहरी तथा अर्धशहरी इलाकों में वार्ड समितियां बनाई जायेंगी। दिल्ली में हुई बैठक को मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी और जीतू पटवारी एवं उमंग सिंघार ने सम्बोधित किया। कुछ अन्य नेताओं ने भी अपने विचार रखे। इस बैठक में जो सुझाव उभर कर आए उन्हें आगामी 8 और 9 अप्रैल को अहमदाबाद के कांग्रेस राष्ट्रीय अधिवेशन में रखा जायेगा। सबसे बड़ी नसीहत नेताओं को यह दी गई कि एकजुट होकर कार्य करें। सवाल यही है कि यह नसीहत कितने दिन तक नेताओं पर असर करेगी या फिर 'आगे पथ और पीछे सपाट' की स्थिति हो जायेगी, क्योंकि अक्सर यह देखा गया है कि इस प्रकार की बैठकों में बातें तो लम्बी -चौड़ी की जाती हैं, लक्ष्य भी दिए जाते हैं और उसे भुलाने में देर भी नहीं होती। पंचायत चुनाव, विधानसभा चुनाव या लोकसभा चुनाव में पार्टी को मिले वोटों के प्रतिशत से जिलाध्यक्षों का भविष्य तय होगा और राजनीतिक विद्वेष पर जो पार्टी कार्यकर्ताओं पर मुकदमें लगते हैं उनमें पार्टी कार्यकर्ता के साथ खड़ी रहेगी। राहुल गांधी ने इस बात पर जोर दिया कि जिलाध्यक्षों को अधिक सक्रिय किया जायेगा तथा जिले से लेकर ब्लाक और बूथ स्तर तक सभी को मिलकर कार्य करना होगा।

और यह भी

योगगुरु बाबा रामदेव का पतंजलि ग्रुप अब मध्यप्रदेश के विंध्य अंचल में भी अपने पैर पसारने जा रहा है। इस ग्रुप को मऊगंज के घुरहेटा में करीब 400 एकड़ भूमि आवंटित की गई है। यहां पर पतंजलि ग्रुप ने एकीकृत प्रसंस्करण स्थापित करने की योजना बनाई है जिसमें खाद्य प्रसंस्करण के साथ ही आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा उत्पाद सहित कुछ अन्य प्रसंस्करण लगाए जाएंगे। इंडस्ट्रियल कारपोरेशन ने भूमि आवंटन के साथ ही 26 करोड़ रुपए की डिमांड भी भेजी है।

मंत्री शाह की अध्यक्षता में दो दिवसीय कार्यशाला 7-8 को

भोपाल (नप्र)। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. विजय शाह की अध्यक्षता में जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति कल्याण विभाग की दो दिवसीय प्रशिक्षण सह-उन्मुखीकरण कार्यशाला 7 एवं 8 अप्रैल को आयोजित की गई है। प्रशासन अकादमी भोपाल में आयोजित प्रशिक्षण सह उन्मुखीकरण कार्यशाला में संभागीय एवं जिला अधिकारी भाग लेंगे।

प्रशिक्षण कार्यशाला में मैदानी स्तर पर तैनात अधिकारियों को विभाग के दैनंदिनी कार्यों के साथ विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन में आई.टी के उपयोग एवं ई-ऑफिस प्रशिक्षण के रूप में एम.पी. टॉस्क पोर्टल के लाइव मॉडल्स का प्रशिक्षण शामिल किया गया है।

प्रशिक्षण कार्यशाला के दूसरे दिन विधि संगत प्रकरणों, अनुदान, सी.एम. हेल्प लाइन प्रकरणों के निराकरण एवं विशेष प्रकरणों में खात्मे एवं लेखा विषयों पर वरिष्ठ अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा सत्र को संबोधित किया जाएगा। छात्रावासों के नियम, छात्रवृत्ति, अत्याचार अधिनियम एवं अन्य विषय विशेष पर वरिष्ठ अधिकारी संबोधित करेंगे।

युवक ने फांसी लगाकर जान दी...

बोला- पत्नी और उसका परिवार मेरी मौत का जिम्मेदार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अशोका गार्डन में अभिषेक बचले ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। गले में फंदा लगाकर उसने एक वीडियो बनाया। वीडियो में उसने कहा कि पापा मुझे माफ कर देना, मेरे से बहुत बड़ी गलती हो गई है। मेरी मौत का जिम्मेदार मेरे घर परिवार में कोई नहीं है, बस काजल (पत्नी) है। उसका भाई उसकी बहन और मां-पिता हैं। इन सबने मिलकर मेरा जीवन बर्बाद कर दिया।मेरी यह हालत कर दी की आज मुझे सुसाइड करना पड़ रही है। मैं मर रहा हूं,...मुझे माफ कर देना हमेशा के लिए जा रहा हूं। घटना शुक्रवार की रात की है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। शनिवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस ने मृतक के मोबाइल फोन को जब्त कर मामले की जांच शुरू कर दी है। सुसाइड से पहले उसने वीडियो बनाकर अपने वॉट्सऐप स्टेटस पर अपलोड किया था।अभिषेक बचले (24) पुत्र मारूति बचले निवासी इंडस्ट्रीयल एरिया अशोका गार्डन ट्रक ड्राइवरी करता था। उसके पिता मारूति बचले ने बताया कि बेटा शुक्रवार को घर लौटा था। वह कई-कई दिन में लौटता था। शनिवार की शाम तक सब ठीक था, रात के समय अचानक परिजनों ने उसके वॉट्सऐप स्टेटस को देखा। बेटा गले में फंदा लगाए, सुसाइड के कारण बता रहा था।

चार साल पहले की थी लव मैरिज- मारूति का कहना है कि बेटे ने चार साल पहले लव मैरिज थी। चरित्र शंका के चलते बेटे और पत्नी में आए दिन विवाद होते थे। शादी के बाद हमें बहू से जुड़ी कई जानकारियां मिलीं। हालांकि शादी हो चुकी थी लिहाजा बेटा इसे हर हाल में निभाना चाहता था।

भोपाल सांसद आलोक बोले- कब्जा करने वाले चच्चा-मम्मा, पहलवान जेल जाएंगे

वक्फ बिल पर कहा- कांग्रेस नेताओं ने अतिक्रमण कर जमीनों को किराए पर दे रखा

भोपाल (नप्र)। भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने वक्फ संपत्तियों पर आए नए बिल को लेकर सख्त रुख अपनाया है। सांसद शर्मा ने कहा कि चच्चा, मम्मा, पहलवान जैसे बड़े लोगों ने वक्फ की जमीनों पर अतिक्रमण किया है, या गलत इनायत हिब्बेनामे बनाकर जमीन कहीं की, रजिस्ट्री कहीं की और निर्माण कहीं और किया है तो अब उनका खेल खत्म होगा। जिन्होंने भी इंक्रोचमेंट किया है, वे सब जेल जाएंगे। आलोक शर्मा ने वक्फ संपत्तियों पर अवैध कब्जे और भ्रष्टाचार के बड़े खेल को खत्म करने की बात कही है।

वक्फ बिल को मंजूरी, जल्द बनेगा कानून- आलोक शर्मा ने कहा कि वक्फ संशोधन बिल लोकसभा और राज्यसभा में बहुमत से पारित हो चुका है। बहुत जल्द राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद यह कानून लागू हो जाएगा। उन्होंने कहा कि यह कानून मुस्लिम समाज के गरीबों और बहनों को न्याय दिलाने के लिए बनाया गया है। नरेंद्र मोदी सरकार ने तीन तलाक कानून के बाद अब वक्फ कानून के जरिए इस दिशा में एक और कदम उठाया है।

कांग्रेस नेताओं पर अतिक्रमण का आरोप- शर्मा ने कांग्रेस के कुछ नेताओं पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि इन लोगों ने वक्फ कमेटी के जरिए जमीनों पर अतिक्रमण किया और उन्हें किराए पर चलाया। उन्होंने दावा किया कि आने वाले समय में ऐसे नेताओं के नाम सामने आएंगे। सांसद ने सिकंदरी सराय, लक्ष्मी टॉकीज और आरिफ नगर जैसी जगहों का जिक्र करते हुए सवाल उठाया कि वहां वक्फ की जमीनों पर किसका कब्जा है और कौन अवैध वसूली कर रहा है।

भोपाल का बेटा उजागर करेगा भ्रष्टाचार

खुद को भोपाल का बेटा बताते हुए शर्मा ने कहा कि वह मुस्लिम समाज के नौजवानों, माताओं-बहनों की शिकायतों को सुनते हैं। उन्होंने ताजुल मस्जिद के पास सिद्दीक हसन तालाब का उदाहरण देते हुए बताया कि वहां रातों-रात नर्सिंग होम तक बना दिए गए। शर्मा ने कहा कि खसरा बस स्टैंड का बताकर रात में निर्माण और फर्जी रजिस्ट्री का खेल अब नहीं चलेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि भ्रष्टाचार करने वालों का ठिकाना अब भोपाल की सेंट्रल जेल होगा।

मोदी सरकार की तारीफ, मुस्लिम समाज से अपील

सांसद ने कहा कि मोदी सरकार और मध्य प्रदेश में डॉ. मोहन यादव की सरकार बेहतर काम कर रही है। उन्होंने मुस्लिम समाज से अपील की कि वे इस कानून का समर्थन करें, ताकि वक्फ संपत्तियों का इस्तेमाल स्कूल, कॉलेज और अस्पताल जैसे जनकल्याण के कार्यों में हो सके। सांसद शर्मा ने अपने महापौर कार्यकाल का जिक्र करते हुए कहा, महापौर रहते पुराने भोपाल को नए भोपाल से जोड़ने के लिए स्मार्ट रोड बनाई थी, जिसका विरोध भी हुआ, लेकिन जनसेवा उनकी प्राथमिकता रही। वक्फ के नाम पर भ्रष्टाचार और चोरी करने वालों को अब बख्शा नहीं जाएगा। कानून बनेगा और दोषियों को सजा मिलेगी। भोपाल में जमीन पर लूट-खसोट की इजाजत नहीं दी जाएगी। मुस्लिम समाज के गरीबों की सेवा ही उनका लक्ष्य है।

एमपी की वक्फ संपत्ति से 100 करोड़ सालाना आना चाहिए

मध्यप्रदेश वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सनवर पटेल ने कहा था कि एमपी वक्फ बोर्ड के अधीन 15008 संपत्तियां दर्ज हैं। इन संपत्तियों से कम से कम 100 करोड़ रुपए सालाना आय होना चाहिए, लेकिन दो करोड़ रुपया भी नहीं आ पाता है। इसलिए जन कल्याण के काम में खर्च नहीं हो पाता। अब नए बिल के लागू होने के बाद राशि आएगी तो जनकल्याण के लिए खर्च की जा सकेगी। भोपाल में नईम खान ने वक्फ की प्रापर्टी का अवैध उपयोग किया है, उनके विरुद्ध आरआरसी जारी हुई है।

कांग्रेस नेताओं का वक्फ पर कब्जा, इसलिए कर रहे विरोध

वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष पटेल ने कहा, कांग्रेस नेता रियाज खान 7.11 करोड़ की आरआरसी जारी हुई है। इन्होंने वक्फ में 15 दुकानें बताई थीं, इसकी जांच हुई तो 115 दुकानें मिलीं। ऐसे ही 1.84 करोड़ की रिकवरी सागर जिले के बीना में कांग्रेस नेता इकबाल खान पर निकली है। नईम खान भोपाल के हैं, उनके विरुद्ध भी सवा करोड़ रुपए आरआरसी जारी हुई है। ये वक्फ की आमदनी से अपना पेट भर रहे हैं। इस बिल से उन्हीं लोगों का विरोध सामने आ रहा है। वास्तव में जरूरतमंद मुसलमान तो इस बिल से खुश है।

अंग्रेजी में बोलने पर आई चीता फैमिली, पीया पानी

बकरी के शिकार के बाद प्यासे थे ज्वाला और शावक, टीम की आवाज पर पहुंचे

श्योपुर (नप्र)। कूनो नेशनल पार्क में चीतों का एक वीडियो सामने आया है। वीडियो में मादा चीता ज्वाला अपने चार शावकों के साथ पानी पीती दिख रही है। मॉनिटरिंग टीम की ओर से परात में डाला गया पानी चीता फैमिली ने बेहद दोस्ताना माहौल में पीया।

पहले मॉनिटरिंग टीम का एक सदस्य (चीता मित्र) केतली और परात लेकर पहुंचा। उसने परात में पानी भरा और शिकार के बाद आराम फरमा रहे चीतों को आवाज दी। इसमें चीतों को अंग्रेजी में 'कम' कहकर बुलाया।

आवाज सुनते ही ज्वाला और उसके चारों शावक फौरन वहां पहुंच गए। यह वीडियो शनिवार सुबह का बताया जा रहा है। चीता फैमिली ने इससे ठीक पहले बकरियों का शिकार किया था।

वर्तमान में कूनो के खुले जंगल में 17 चीते विचरण कर रहे हैं। ये चीते लगातार अपना क्षेत्र बढ़ा रहे हैं और सक्रिय रूप से शिकार कर रहे हैं। पिछले कुछ दिनों से चीतों की गतिविधियों के कई वीडियो सामने आए हैं। इनमें चीते कभी हिरणों के झुंड का शिकार करते दिखे, तो कभी बकरियों पर हमला करते। क्षेत्र में कई पानी के स्रोत सूखे होने के कारण मॉनिटरिंग टीम चीतों को परात में पानी उपलब्ध करा रही है, ताकि पानी की कमी न हो।

चीता मित्रों की कमांड समझने लगे हैं कूनो के चीते- मॉनिटरिंग टीम के साथ चीतों की सुरक्षा में जुटे चीता मित्र अब चीतों को पहचानने लगे हैं। चीते भी उनकी कमांड समझने लगे हैं। चीतों को परात में पानी पिलाने वाले चीता मित्र का नाम सत्तू गुर्जर बताया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में सोशल इंप्लीकेशन्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस विषय पर आयोजित सेमिनार को संबोधित किया।

सीजन में पहली बार एमपी में लू का अलर्ट

7-8 अप्रैल को उज्जैन-ग्वालियर में हीट वेव चलेगी, भोपाल-इंदौर में तेज गर्मी

भोपाल (नप्र)। गर्मी के इस सीजन में पहली बार मध्यप्रदेश में हीट वेव यानी, लू का अलर्ट है। मौसम विभाग ने 7 और 8 अप्रैल को उज्जैन, ग्वालियर और चंबल संभाग के 10 जिलों में लू चलने की संभावना जताई है। वहीं, भोपाल, इंदौर, जबलपुर-सागर संभाग में भी तेज गर्मी पड़ने का अनुमान है।

भोपाल की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम और एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस साइक्लोनिक सर्कुलेशन के रूप में एक्टिव रहा। इस वजह से कहीं-कहीं हल्की बारिश और बादल छाए रहे। गर्मी का असर बढ़ेगा। जिससे तापमान में भी बढ़ोतरी होगी। अगले 3 से 4 दिन तक दिन का तापमान बढ़ सकता है। वहीं, 7-8 अप्रैल को हीट वेव यानी, गर्म हवा चलने का अनुमान है।

दो दिन तेज गर्मी का अलर्ट- मौसम विभाग के अनुसार, 7 अप्रैल को नीमच, मंदसौर, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड और दतिया में लू चल सकती है। 8 अप्रैल को नीमच, मंदसौर, श्योपुर, मुरैना, ग्वालियर, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना और अशोकनगर में हीट वेव का असर रहेगा।

कहीं बारिश तो कहीं दिन के तापमान में बढ़ोतरी- इससे पहले गुरुवार को भिंड, मुरैना, ग्वालियर, दतिया, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, सीहोर, भोपाल, हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, बड़वानी, खरगोन, बुरहानपुर, खंडवा, सागर, दमोह, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट और मंडला में हल्की बारिश हुई थी।

वहीं, शुक्रवार को ग्वालियर, दतिया, भिंड, मुरैना, सिंगरौली, सीधी, अनूपपुर, शहडोल और डिंडौरी में बादल, गरज-चमक वाला मौसम रहा। हल्की बूंदाबांदी भी हुई।

प्रदेश के अन्य शहरों में गर्मी का असर देखा गया। कई जगहों पर तो पारा 7 डिग्री तक बढ़ गया। नर्मदापुरम-रतलाम में 40 डिग्री, खजुराहो में 39.2 डिग्री, धार में 39.1 डिग्री, गुना-टीकमगढ़ में 39 डिग्री, नौगांव में 38.4 डिग्री, खरगोन में 38.2 डिग्री और सतना में पारा 38 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 37.6 डिग्री, इंदौर में 37.4 डिग्री, ग्वालियर में 38 डिग्री, उज्जैन में 38.2 डिग्री और जबलपुर में 37 डिग्री सेल्सियस रहा।

ऋषिपुरम, डीआईजी बंगला-मालवीय नगर में शिफ्ट हुईं शराब दुकानें

सेमरा में मामला उलझा, दुकान के सामने ही 5 दिन से धरने पर बैठे लोग

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 3 शराब दुकानों की शिफ्टिंग का मामला सुलझ गया है। ऋषिपुरम तिराहे, डीआईजी बंगला और मालवीय नगर में दुकानें अन्य जगह पर शिफ्ट होंगी। रहवासी इलाका, स्कूल और धार्मिक स्थल होने के चलते लोग प्रदर्शन रहे थे।

दूसरी ओर, सेमरा गेट साईंराम कॉलोनी का मामला उलझा हुआ है। इस कारण दुकान के सामने ही 5 दिन से लोग धरने पर बैठे हैं। शनिवार दोपहर 1 बजे से उन्होंने फिर से सुंदरकांड का पाठ शुरू कर दिया। प्रदर्शन कर रहे जीतू मलोटिया और विशाल कुरील ने बताया कि शराब की दुकान को हटाने के लिए सुंदरकांड पाठ का आज पांचवां दिन है। कलारी के सामने ही महिलाएं सुंदरकांड के पाठ में हिस्सा ले रही हैं। वहीं, महिलाओं ने सद्बुद्धि के लिए व्रत भी रखा है।

जनसुनवाई में शिकायत, निराकरण नहीं- सेमरा गेट साईंराम कॉलोनी के लोग पिछली 3 जनसुनवाई में शराब दुकान को दूसरी जगह पर शिफ्ट करने की भी मांग कर चुके हैं। पिछले दिनों कई महिलाएं हाथों में तख्तियां लेकर अफसरों के पास पहुंची थी। महिलाओं ने जल्द दुकान शिफ्ट नहीं होने पर आंदोलन करने की चेतावनी भी दी थी।

उनका कहना था कि कई बार शराबी गंदी हरकतें करते हैं, जिससे बच्चों और महिलाओं को परेशानी होती है। कई बार

शिकायत कर चुके हैं, लेकिन सिर्फ आश्वासन ही मिलता है। इसके चलते अब उन्होंने सुंदरकांड, धरना प्रदर्शन शुरू किया।

इन जगहों पर भी विरोध हुआ

मालवीय नगर- वार्ड नंबर-34 स्थित मालवीय नगर में नई शराब दुकान खुल रही है। इसके पास ही विधायक रेस्ट हाउस, बिड़ला मंदिर भी है। वहीं, घना रहवासी इलाका भी है। इसके चलते लोग विरोध कर रहे थे। हालांकि, अब दुकान पुरानी जगह पर ही रहेगी। ऐसे में लोगों को बड़ी राहत मिली है।

ऋषिपुरम तिराहा- अवधपुरी के इस प्रमुख इलाके में दुकान शिफ्टिंग का मामला जोर पकड़ रहा था। लोग सड़क पर उतरकर आंदोलन कर रहे थे। इस दुकान को अब कुछ दूरी पर लगाए जाने की प्रक्रिया शुरू हुई है। हालांकि, लोग अवैध कब्जे को तोड़ने की मांग कर रहे हैं।

डीआईजी बंगला- यहां भी लोग प्रदर्शन कर रहे थे। उनका कहना था कि दुकान को अन्य जगह शिफ्ट किया जाना चाहिए। विरोध के बाद यहां से भी दुकान शिफ्ट की जा रही है।

बावड़ियाकलां चौक- यहां शराब दुकान खोलने के विरोध में लोग सड़क पर उतर चुके हैं। उनका कहना था कि जिस जगह दुकान खोली जा रही है, उससे सिर्फ 50 मीटर दूर ही अस्पताल और रहवासी इलाका है। वहीं, मंदिर होने से लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही हैं।

पंचशील नगर- रहवासी इलाके में दुकान होने की वजह से कई लोग प्रदर्शन कर चुके हैं। उनका कहना है कि मुख्य मार्ग पर ही दुकान है। इससे शराबी घरों के सामने हुड़दंग करते हैं।

बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर)- युवा सिंधी मंच के अध्यक्ष जयराम नंदवानी ने भी समाजजनों के साथ कलेक्टोरेट पहुंचकर शराब दुकान शिफ्ट करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि संत हिरदाराम नगर को शराब मुक्त किया जाए। यहां 3 दुकानें हैं, जो नगर निगम शॉपिंग कॉम्पलेक्स में एसबीआई, डाकघर और निगम जोन ऑफिस के पास है।

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

काले एवं भूरे रंगों के बीच बसा अमूर्त रचना संसार

कलाकार शैलोज मुखर्जी के सानिध्य में आते ही रामकुमार कला के प्रति बावले-से हो उठे। उकील कला बिद्यालय के इवनिंग कक्षाओं में बारीकियां सीखने के बाद इन्हे आगे की शिक्षा हेतु पेरिस जाना पड़ा जहाँ आन्द्रे लहोत तथा फर्नाण्ड लींगर के निर्देशन में इनके कला को और धार मिली। लींगर के कला का ही असर रहा कि क्यूविज्म को इतनी अधीरता से अपनाने में सफल हुए कलाकार रामकुमार - जिसकी जकड़ से ये कभी मुक्त नही हो पाये और जो इनकी पहचान बनी। मनुष्य जिस दशा को जी रहा होता है, जो कुछ भी आस-पास घटित हो रहा होता है उसी के सापेक्ष ही अधिकतर का सोचना होता है पर उससे इतर सोच पाना ही एक सफल कलाकार का कौशल माना जाता है जो हमें जीवन के गूढ़ रहस्यों के अधिक निकट ले जाने में सक्षम हो, तभी तो हसीन वादियों के इस कलाकार के अधिकतर शुरूआती चित्रों में ब्लैकिस व ब्राउनिस टोन की अधिकता है जो कहीं से भी जीवन की सम्पन्नता को उजागर नही करता।

छि अमूर्त भूदृश्य चित्रकार रामकुमार अपने में ही अथाह सागर ढूढ़ने वाले शालीन, संकोची बचपन से ही सीमित दायरे में रहना पसंद करते थे पर कृतियाँ दायरों के बंधनों से मुक्त थीं शायद यही वजह है उनके अधिकतर कृतियों का 'अन्टाइटल्ड' रह जाना जहाँ वो ग्राही को पूर्णतः स्वतंत्र छोड़ देते हैं भावों के विशाल या यूँ कहें असीमित जंगल में भटक जाने हेतु। किसी से मिलना जुलना भी कम ही किया करते थे। उन्हे सिर्फ और सिर्फ प्रकृति के सानिध्य में रहना अच्छा लगता था - उनका अन्तर्मुखी होना शायद इसी वजह से सम्भव हो सका और सम्भव हो सका धूमिल रंगों तथा डिफरेंट टेक्स्चरों से युक्त सम्मोहित-सा करता गीत।

कलाकार शैलोज मुखर्जी के सानिध्य में आते ही रामकुमार कला के प्रति बावले-से हो उठे। उकील कला बिद्यालय के इवनिंग कक्षाओं में बारीकियां सीखने के बाद इन्हे आगे की शिक्षा हेतु पेरिस जाना पड़ा जहाँ आन्द्रे लहोत तथा फर्नाण्ड लींगर के निर्देशन में इनके कला को और धार मिली। लींगर के कला का ही असर रहा कि क्यूविज्म को इतनी अधीरता से अपनाने में सफल हुए कलाकार रामकुमार - जिसकी जकड़ से ये कभी मुक्त नही हो पाये और जो इनकी पहचान बनी। मनुष्य जिस दशा को जी रहा होता है, जो कुछ भी आस-पास घटित हो रहा होता है उसी के सापेक्ष ही अधिकतर का सोचना होता है पर उससे इतर सोच पाना ही एक सफल कलाकार का कौशल माना जाता है जो हमें जीवन के गूढ़ रहस्यों के अधिक निकट ले जाने में सक्षम हो, तभी तो हसीन वादियों के इस कलाकार के अधिकतर शुरूआती चित्रों में ब्लैकिस व ब्राउनिस टोन की अधिकता है जो कहीं से भी जीवन की सम्पन्नता को उजागर नही करता। शिमला के खुबियों के सम्पन्नता के बीच दबे दमित कुंठित विभाजन में विस्थापित भावनावों के संकलन इनके फिगरेटिव कृतियों में स्पष्टतः उजागर है जो मानव जीवन के भयावह समय को दर्शाता है। एक ऐसा कलाकार जो बचपन में ही चीड़ के पेड़ों से मोहब्बत कर बैठा, जिसके फल व पत्ते तोड़ने वाले भी उसे राक्षस जान पड़ते थे, जो चीड़ के फलों को तोड़ लिए जाने पर झरे हुए पत्तों को देखकर घण्टों रोता रहा, रात को खाना तक नही खाया, प्रकृति प्रेम उसके चित्रों में आसानी से देखा जा सकता है, जिया जा सकता है प्रकृति का असली वजूद उनके चित्रों का दीदार करके। शिमला में पैदा होने की वजह से ही उनके बनारस के चित्रों में भी कुछ-कुछ पर्वतीय छवि दिखाई देती है यानी शिमला के पहाड़ बनारस की गलियों, घाटों में आकर समाहित से हो गये हैं। बनारस जो कई नामों से जाना जाता है, जहाँ मस्ती, सरलता, बम-बम के बोल, निश्छलता, मानवता, सांस्कृतिक-समभाव, मिलनसार व्यक्तित्व की गहनता, धर्म और संस्कृति की प्राचीनता स्पष्ट झलकती है, जहाँ का अतीत ही रहा है कि जो यहाँ आया यहीं का हो गया और बनारसी खुमार से बच नही पाया - कुछ ऐसा ही रामकुमार के साथ भी हुआ। रामकुमार को बनारस में अपना व दृश्यकला का भविष्य दिखाई दे रहा था। यही वजह है कि बनारस ही रामकुमार की पहचान बनी। शुरूआती बनारस घाट के भूदृश्यों में रामकुमार ने चित्रों की गंभीरता को दर्शाया है जो डार्कनेस की वजह से और भी सटीक प्रतीत होते हैं और कलाकार मझे हुए चित्रकारों की श्रेणी में आ खड़ा होता है। आकृतियां आयत व वृत्त के बड़े-बड़े पैचेज तक भले ही सिमट गयी हों पर इसी बहाने भारतीय कला में आब्स्ट्रैक्ट आर्ट का एक नया प्रतिमान गढ़ा जा रहा था। कहना गलत ना होगा कि भारतीय चित्रकला में अमूर्तता विशेषतः भूदृश्य चित्रों में शुरूआत करने वाले पहले भारतीय चित्रकार रामकुमार ही हैं।

भारतीय दर्शन को ज्यामितीयता का अमली जामा पहनाने का प्रथम श्रेय भी इन्हीं को जाता है। इनके 60 के दशक के भूदृश्य चित्रों विशेषतः बनारस श्रृंखला में अधिकतर चित्र काले और भूरे रंगों की गहरी पृष्ठभूमि से सजे हुए हैं जो बनारस को भी एक नये अध्याय के रूप में प्रस्तुत करते हैं। गहरे सन्नाटे में बिथा घाट,ज्यामितीय आकृतियों में गलियां, काले भूरे रंगों की वजह से गहरी अभिव्यक्ति को प्रकट करते हैं और कहीं न कहीं से शिव जैसी विशाल, न समझ पाने वाली दुनिया का सृजन भी करते हैं। हालांकि बनारस विषाद से भरा शहर नही हो सकता ये तो हरफनमौलाओं का शहर है पर इनके चित्रों में बनारस एक नये ही रूप में प्रस्तुत हुआ है। धीरे-धीरे समय के साथ इनके चित्रों में नीले और पीले रंगो की छाप भी दिखने लगती है आगे के चित्र और भी रंगीन होते गये हैं साथ ही जो गंभीरता शुरू के चित्रों में थी फीकी पड़ती गयी है। कम बोलने व मिलने वाले रामकुमार अपनी कृतियों में खुलकर बतियाते हैं फिर चाहे वह कहानी हो या चित्र। बन्धन से परे अपने पर को खोलकर ये समाज के दुःख, दर्द यथा बेरोजगारी, बेकारी, दिन-ब-दिन नष्ट होती मानवीयता पर स्पष्ट तूलिका संचालन करते हैं जो ज्यामितीय व गहरे रंग संयोजन की वजह से और भी सटीक तरीके से उजागर हुआ है। निश्चित आयाम, संतुलन तथा सामंजस्य जो सौंदर्य की विशेषतायें हैं रामकुमार के चित्रों में भी कायम है अर्थात सौंदर्यबोध की दृष्टि से भी इनके चित्र अनमोल हैं। बड़े ही धीरे से अपने कृतियों के माध्यम से सौंदर्यबोध के साथ ही पर्यावरण के रोचक रहस्यों को भी प्रस्तुत कर देने में रामकुमार को महारत हासिल है। भारत में और बाहर भी तमाम सफल प्रदर्शनियां करने वाले और बिकने वाले रामकुमार का मुख्य उद्देश्य मानवदशा पर चिंतन करना और उसके अनुभूतियों को उजागर करना था जो प्रथमतः छोटी-छोटी कहानियों के रूप में स्फुटित हुई और आगे चलकर विशालतम रूप अख्तियार कर ली। चित्रों में शुरूआती चित्र फिगरेटिव पोट्रेट जैसे हैं जो अर्बन वातावरण की निरीहता को दर्शाते हैं। लाचार, निराश, भूखा, मरियल, हतास व्यक्तित्वों का रामकुमार के फलक पर जगह पाना और समस्त बेवशी का उदास आँखों में समा जाना उनके आम इंसान के प्रति उनकी सहानुभूति की ही उपज है। 1975 में निर्मित अन्टाइटल्ड वर्क (इंक ऐण्ड वैक्स आन पेपर) में एक व्यथित मनुष्य की वेदना इसी का उदाहरण है। इनकी कला कृतियाँ खुद अपनी बात कह पाने में सक्षम है। भूमि, आसमान, कौतुहल, विस्मय, पीड़ा, बोझ, खण्डहर, घाट, परिवार, शहर जैसे इनके अधिकतर चित्रों में विषाद की भरमार है। पेरिस, प्राग, कोलम्बो, पोलैंड, अमेरिका आदि जगहों पर व्यक्तिगत प्रर्दशनी करने वाले रामकुमार भारतीय लोककलाओं पर भी अधिकार रखते हैं।

उनके बाद के चित्रों को देखकर कहा जा सकता है कि समय के साथ ही उनके एकाकी व्यक्तित्व में भी निखार आया है। पर यह निखार रचनाओं की गम्भीरता को कहीं से भी कमतर नही होने देता, रंगों में भले ही विविधता रही हो पर धूमिलता और उदाशीनता सदा ही कायम रही है यही वजह है कि उनके अधिकतर चित्रों मे प्रकृति का नैसर्गिक रूप परिलक्षित नहीं हुआ है बल्कि पैचेज और ज्यामितियों से खेलते हुए ही आखिरी समय तक उनका सफर जारी रहा। जहाँ कहीं झरोखों से युक्त बनारस नजर आता है वहाँ गोल्डेन यलो का प्रयोग चित्र को जीवंत बना देता है। ज्यामितीय आकृतियों - युक्त छोटे-छोटे मोनोक्रोमिक मंदिर, काली-काली पट्टियाँ लाल रंग के बिंदियों का प्रयोग बनारस को रहस्यमयी बना देते हैं। टूटे-फूटे लकड़ियों का दिवालों में खोंस देना डिस्टर्ब रेखाओं का प्रयोग, सैप ग्रीन, यलो, डार्क ब्लू के परफेक्ट स्ट्रोकों के बीच बड़े-बड़े व्हाइट पैचेज-युक्त सीढ़ियां जो परिप्रेक्षानुसार धीरे-धीरे घटती गयी है - बनारस को मोक्ष द्वार के रूप में उजागर करती हुई सी प्रतीत हुई हैं। चित्र साभार गूगल से।

कविता

बिन तुम्हारे पथ अराल

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद

बिन तुम्हारे पथ अराल
जैसे हिंसक जंतु व्याल।

निविड़ विपिन अंधकार
उलझन बढ़ती अनिर्वार
नवपथ कहाँ केवल विसार
आतप अंक जटिल जाल
बिन तुम्हारे, पथ अराल।

ले हिलोर तम सिंधु जाग
पारावार के अनुताप आग
मृदुल तिक्त है मधुर राग
अनुराग बना उन्माद काल
बिन तेरे, पथ अराल।

तम पग छू बह झर-झर
चिर तरल पारद निर्झर
कर गया उर मृदु उर्वर
रचकर साँसों का सवाल
बिन तुम्हारे, पथ अराल।

कुहरे-सा धुँधला कोर
पुलिन है तम घनघोर
खींचता फिर भी, उस ओर
झंझा है, छाया विशाल
बिन तुम्हारे, पथ अराल।

पाषाणों की शैया पाता
उस पर परस गान बिछाता
नित आनत गाता ही जाता
अलख वरण, मरण ताल
बिन तुम्हारे, पथ अराल
जैसे हिंसक जंतु व्याल।

लघुकथा

बदल गई इमोजी

सुरेश सौरभ

घर में आकर सीमा एकदम शांत चित्त बैठ गई। चेहरे पर उसकी विषाद की घनी-घनी सिलवाटें पड़ चुकी थीं। आंखों में कोई नमी तैर रही थी।

''क्या हुआ बेटी?'' मां ने पानी का गिलास उसे थमाते हुए हौले से पूछा, तो वह एकदम चौंक पड़ी।

दो घूंट पानी पीकर गिलास टेबल पर रख कर वह बोली-''कुछ नहीं बस यूं ही।'' उसके सामने आकर मां ने आश्चर्य से कहा, ''कुछ तो जरूर है बेटी?''

अब तो वह एकदम से फूट पड़ी। मां के गले से लिपट गयी, चिंहुकते हुए बोली-''मां हम लोग मंच पर नाच-गा करके अपनी जिंदगी गुजर-बसर करते हैं, तो क्या इसमें कोई गुनाह करते हैं।''

मां ने कहा-''नहीं बेटी? यह कोई गुनाह नहीं? अपनी आजीविका चलाने के लिए आखिर इंसान को कुछ न तो कुछ करना ही पड़ता है। तेरे पिता भी तुझे प्रसिद्ध नृत्यांगना के रूप में देखना चाहते थे, जीते जी तो वह न देख सके, पर मुझे पूरा विश्वास है, एक दिन तू जरूर उनके सपनों को साकार करेगी। फिर उस दिन ऊपर आकाश से ढेर सारा आशीर्वाद तेरे पापा तुझ पर लूटाएंगे। बेटी नृत्य कला को साधना एक कला है। इसमें बरसों की तपस्या लगती है, कठिन परिश्रम करना होता है, जो इसे ओछी नजरों देखता है या ओछी टिप्पणी करता है, वह निरा मूर्ख और अज्ञानी है। बेटी आज किसी मूर्ख ने कुछ कहा क्या तुझसे?''

वह बोली-''मां मैं अपना नृत्य का कार्यक्रम समाप्त करके ऑडिटोरियम की गैलरी से गुजर रही थी। लोग मेरी प्रशंसा के तमाम पुल बांध रहे थे। तभी किसी ने पीछे से फब्ती कसी-पतुरिया बड़ा अच्छा नाचती है। बड़ा अच्छा मुजरा करती है।''

'बेटी कौन था वह।''

मैंने फौरन मुड़कर देखा, नाम तो पता नहीं, हाँ कुछ चेहरा जाना-पहचाना सा लग रहा था। शायद अपने ही इलाके का कोई छुटभैया नेता टाइप का था। मैं चाहती तो उसका जवाब वहीं दे सकती थी, पर वहां से गुजर रहे लोगों और तमाम संभ्रांत समाज के सामने कोई बखेड़ा नहीं खड़ा करना चाहती थी। कनखियों से मैंने फिर पीछे देखा तो वह पीछे से ही कहीं सरक कर दफा हो चुका था। मैं उसकी ओछी टिप्पणी को सुनकर अनसुना कर चुकी थी। फिर बात आई-गई हो गई।''

''बेटी चिंता न कर कभी न कभी, कोई न कोई उसकी फब्ती का जवाब बढ़िया देगा। ऐसे लोग अपनी हरकतों से कहीं न कहीं एक दिन फंसते जरूर हैं। तब उन्हें अपनी गलती का अहसास होता है। तब उन्हें अपनी असली औकात पता चलती है।''

बरसों बीतते गये। सीमा नृत्य कला में बहुत पारंगत होते हुए प्रसिद्ध होती चली गयी। अब रंगमंच से उसकी नृत्य कला देखने लिए महंगे टिकट लगने लगे। संभ्रांत समाज में उसने बहुत ही मान-सम्मान कमाया। धन कमाया।

एक दिन वह अपने मोबाइल पर कुछ सर्च कर रही थी। फिर कुछ मनोरंजन के लिए अनायास रील्स देखने लगी। अचानक उसकी नजर एक रील पर ठहर गई। अरे! यह तो वही छुटभैया नेता है। जिसने बरसों पहले मेरे नृत्य कला को मुज़रा कहा था। देखो आज यह कैसी बेशरमी से एक महिला के साथ फूहड़ता से नाच रहा है। भद्दे-भद्दे इशारे करके लाइक शेअर कमेंट की भीख मांग रहा है। सीमा ने कमेंट बॉक्स में लिखा-मुज़रा करना कोई गुनाह नहीं, बस इसे पेशेवर रूप से करेंगे, सही ढंग से करेंगे, तभी असल फायदा होगा तुम लोगों को।''

उसने जवाब दिया-''मेरी कुछ मजबूरियां हैं,नाचना-गाना हमारा पेशा नहीं। कृपया अपमान न करें मोहतरमा।''

'किसी का अपमान करना मेरा मकसद नहीं,पर जिस अश्लीलता और जिस फूहड़ता से तुम लोग नाच रहे हो, उसे देख कर तो यही लग रहा है कि यह तुम्हारा नाच तो मुजरे से भी गया गुजरा है। अगर कुछ नृत्य कला सीख लो तो मैं तृम्हारी कुछ मदद कर सकती हूं। मैं तुम्हारे ही क्षेत्र की नृत्यांगना सीमा हूं।''

''ओह! आप सीमा जी है। क्षमा करें। बरसों पहले.....बीच में ही सीमा ने कमेंट झोंक दिया-हां हां याद है, बरसों पहले आपने मुझे बड़ा मान-सम्मान दिया था। मैं उससे आज भी अभिभूत हूं। हमेशा आप की आभारी रहूंगी। इसलिए मैं आप की कुछ मदद करना चाह रही हूं। किसी का परिहास उड़ाना या अपमान करना मेरा कोई मकसद नहीं रहा? मैं जो हूं जैसी भी हूं, यह सभी जानते हैं।''फिर प्रणाम की तमाम इमोजी बनाते हुए उसने लिखा-''एक प्रसिद्ध नृत्यांगना का सहयोग मिलेगा तो अवश्य ही मेरे गुरबत दिन सुधर जाएंगे बहन जी।''

सीमा ने प्रणाम की इमोजी बनाकर जवाब लिखा-''किसी के काम आ सकूं तो अपने इस जीवन को धन्य समझूंगी भैया।''

कविता

कमतरी रही विचारों की

राजकुमार कुंभज

एक नहीं, अनेक हैं छवियाँ
जीवन की, मृत्यु की, प्रेम की, घृणा की
एक आदमी जागता है, भागता है यहीं-कहीं
और तानते हुए छाता बकता है गालियाँ
यहीं-कहीं एक दूसरा भी है और तीसरा भी
जो छुपते-छुपाते भीगता है और बजाता है तालियाँ
वह एक आदमी जो जागता और भागता है
सिर्फ़ दूसरों से नहीं, खुदसे भी बचता है
और वह जो दूसरा, तीसरा है वही कुछ रचता है
जो बचता है, वो रचता नहीं है
जो बचेगा, कैसे रचेगा, कुछ याद नहीं?
जो रचेगा, वही बचेगा, कैसे याद रहे?
कुछ लोगों ने देखा, सुना, सोचा बहुत कुछ
और फिर निकल पड़े घर से, घर के लिए
ये समझते हुए कि अपने-से लोग हैं, अपनी-सी आग
अपने-से खेतों में, अपना-सा अन्न
अपनी-सी पृथ्वी, अपना-सा पीने का पानी
अपने-से मंदिर, मस्ज़िद, चर्च, गुरुद्वारे
अपने-से खेल मैदान, अपने-से स्कूल
कथा-कहानियाँ अपनी-सी, सुख-दुःख अपने-से
सपनों में रंग सपनों के सब अपने जैसे ही सबके
फिर मिला वही सब बिखरा-बिखरा-सा हर कहीं
कमतरी रही विचारों की और बहुप्रथाएँ
नमक और पानी की बढ़ती गई दूरियाँ, दरारें
शाख़-शाख़ पर कोयल जो गाती थी, क़ैद हुई
राजनीति के धंधे में व्यस्त हुआ वसंत
ज़रा भी बदले नहीं परदे और रंग थे कि बदलते गए
विश्वास ने बदले चेहरे, ज़रा भी बदले नहीं मुखौटे
पास आता गया डर, बढ़ती गई दूरियाँ
एक नहीं, अनेक हैं छवियाँ।

खाकी- द बंगाल चेप्टर तीखे तेवर वाला सियासी ड्रामा

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

नीरज पाण्डे द्वारा अभिकल्पित वेबसिरीज़ - ' खाकी द बंगाल चैप्टर ' उनकी पिछली वेब सिरीज - ' खाकी द बिहार चैप्टर ' की दूसरी कड़ी है ,मगर उसकी प्रस्तुति और कहन के तेवर में काफी अन्तर है और इसका बुनियादी कारण अलग-अलग सियासी माहौल है । इस श्रृंखला की सभी सिरीज़ की कहानियां मुख्यतः खाकी वर्दी पहनने वालों की हैं। कहीं असल घटनाएं हैं तो कहीं कुछ कल्पित भी है । इस सिरीज़ की कहानी उस दौर की है जब विपक्ष की एक महिला नेता ने सत्ताधारी दल की नाक में दम कर रखा था।

राजनीति और अपराध कैसे साथ-साथ चलत है और इसके गठजोड़ के क्या कुछ दुष्परिणाम होते हैं यह कहानी कई बार छोटे- बड़े परदे पर आ चुकी है । इस बार भी कहानी कमोबेश वैसी ही है। बंगाल का एक नेता बरुणदास अलग अलग अपराधियों का इस्तेमाल कर अपनी राजनीति चलाता है। एक ईमानदार पुलिसवाला अर्जुन मोइत्रा यानि जीत उसे ऐसा करने से रोकने की कोशिश करता है । हत्या दर हत्या और नेता और पुलिस के बीच लुकाछिपी , कहानी में कई मोड़ मगर सत्य की

जीत मार्का कहानी कुछ कुछ दमदार भी है ।

इस वेबसिरीज के मुख्य नायक 'जीत' हैं , यह भूमिका बंगाली अभिनेता जीत मदनानीने निभाई है । जींस पहने, कोहनी तक आस्तीनें चढाए जीत ने काम भी शानदार किया है। इस सिरीज की कास्टिंग के लिए विकी सदाना खासतौर से तारीफ के हकदार हैं। छोटे से छोटे चरित्र के लिए भी उन्होंने बढ़िया से बढ़िया कलाकार चुने हैं। गोल्फ खेलते उद्योगपति के रूप में राजेश तिवारी का चुना जाना इसका एक अच्छा उदाहरण है । एक एपीसोड में ही दिखे परमब्रत, दो एपीसोड में ही दिखे शाश्वत और एपीसोड दर एपीसोड कुछ-कुछ देर के लिए दिखती रहीं चित्रांगदा । इन सभी ने अपने अभिनय से सिरीज को नई ऊँचाईयां दी है ।जीत के सहायक के रूप में महाक्षय और आकांक्षा ने सिरीज के रहस्य को अच्छा सम्हाला है। कहानी के आखिर तक संदेह की सुई इन्हीं दोनों पर टिकी रहती है और जब मामला खुलता है तो वह भी थोड़ा बहुत तो चौंकाता ही है। सिरीज की असल उपलब्धि ऋत्विक और आदिल के अलावा प्रोसेनजीत भी रहे । उन्होंने खुद को एक दमदार खलनायक के रूप में पेश किया है और आने वाले समय में ऐसे कुछ और चरित्र उन्हें हिंदी सिनेमा में मिल सकते हैं। श्रुति दास, जॉय सेनगुप्ता और पूजा चोपड़ा भी जब भी परदे पर दिखते हैं, अपना असर महसूस कराते ही हैं।

सिरीज का निर्देशन देबात्मा मण्डल और तुषार कांति रे ने किया है, जबकि नीरज पाण्डे, देबात्मा और सम्राट चक्रवर्ती ने इस सिरीज को लिखा है। सिरीज की कथा और पटकथा दोनो से ही जो कुछ घटने वाला है उसका आभारस तो होता है मगर सिरीज़ के निर्देशन, सिनेमैटोग्राफी और बेहतरीन कास्टिंग ने इस सिरीज को बेहतरीन बना दिया है। हर चरित्र को अच्छी तरह से पेश किया गया है और हर रोल को कहानी के अनुसार ही पेश किया गया है। हालांकि, 'खाकी- द बंगाल चैप्टर' में कई जगह कहानी थोड़ी बोरिंग लगी और इसमें बहुत सारे दृष्य भी बिना मतलब जोड़ने की कोशिश की गई, लेकिन फिर भी कलाकारोंझ के अभिनय और दमदार स्टोरी आपको सिरीज के अन्त तक बाँधे रखती है। सिरीज में तब ज्यादा मजा आता है जब पुलिस अधिकारी अर्जुन मैत्रा द्वारा अन्तिम अपराधी को आसानी से पकड़ लेता है, क्लाइमेक्स बाकी शो की तुलना में थोड़ा फीका लगा है। संगीत और बैकग्राउंड स्कोर थोड़ा ड्रामे वाला है, लेकिन जीत गांगुली को एक दिलचस्प टाइटल ट्रैक तैयार करने का श्रेय दिया जाना चाहिए। ' अइयेना हमरा बिहार में बेहतरीन है, लेकिन ' एक और रंग भी देखिए बंगाल का भी मजेदार है।

' खाकी- द बंगाल चैप्टर ' सिरीज देखने लायक है, लेकिन कहानी में कुछ नया नहीं है। फिल्मों और सिरीज में हमने कई बार राजनीति और अपराध का मिश्रण देखा है। हालांकि, सिरीज में बंगाली भाषा कुछ लोगों के लिए नई है। एक्शन अच्छा है, लेकिन स्लो-मोशन सीक्वेंस आपको परेशान कर सकते हैं। सिरीज में नए और कम देखे जाने वाले चेहरे हैं। सिरीज की स्टोरी आपको अन्त तक बाँधे रखती है और ट्विस्ट आपको एक मिनट के लिए भी सीट से उठने नहीं देंगे।

स्थापना दिवस पर विशेष

विष्णुदत्त शर्मा

लेखक भाजपा मध्यप्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं।

भाजपा: असंभव को संभव करने का नाम

आज की पीढ़ी को यह जानना चाहिए कि 1980 के दशक का कालखंड भारतीय राजनीति का टर्निंग प्वाइंट था, जब भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। देश के राष्ट्रवादी समूहों ने एक सपना देखा था, जिसमें भारतीय गौरव की पुनर्स्थापना, भारत के आध्यात्मिक उत्कर्ष, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के विचार-बीज थे। आज वे बीज फलदार बृक्ष हो चुके हैं। 45 साल में वे सारे सपने साकार हो चुके हैं। राजनीतिक क्षेत्र में यह आश्चर्य का विषय हो गया है कि कैसे एक पार्टी 2 सीटोंसे अपनी यात्रा शुरू करते हुए सबसे बड़े लोकतंत्र की सबसे बड़ी पार्टी बनकर आज राजनीति के प्रतिमान बदल रही है। पार्टी विद डिफरेंस के नारे को मूर्त रूप देकर कार्यकर्ताओं ने सारी दुनिया को सियासत का अनूठा स्वरूप दिखाया है।

स्वाधीनता के बाद 1951 में जब पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, बलराज मधोक और दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ बनाया था तबविरोधीउनकी हँसी उड़ाते थे कि ये क्या राजनीति करेंगे और जब 1980 में भाजपा की स्थापना हुई तो उनके ताने बढ़ते गये। उस दौर में अटल जी ने कहा था- अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा। आज भाजपा सारी चुनौतियों को ध्वस्त करके भारतीय राजनीति की धुरी बन चुकी है, केंद्र सहित डेढ़ दर्जन राज्यों में सरकार है औरसबसे पुरानी पार्टी का दावा करने वाले पारिवारिक गिरोह न केवल सत्ता को तरस रहे हैं बल्कि अपनी तथाकथित पारंपरिक सीटें भी गँवा बैठे हैं। अपनी 45 वीं वर्षगांठ मना रही भाजपा ने भारत की राजनीति में जो रास्ता चुना था, उस पर चलकरइसने सारी दुनिया को चकित किया है। पार्टी ने आज देश को भ्रष्टाचार, परिवारवाद, अपराधीकरण, जातिवाद, तुष्टिकरण, आतंकवाद जैसे घावों से मुक्ति दिलाईहै। साथ ही उन सभी मुद्दों को हल करके राजनीति में नया अध्याय लिख चुकी है, जिनकापार्टी ने अपनी स्थापना के समय संकल्प लिया था। कश्मीर में धारा 370 की विदाई या श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण से लेकर वक्फ बोर्ड कानून में बदलाव तक के सभी संकल्प भाजपा ने पूरे किये हैं। अपनी कथनी और करनी से आज यह सर्वाधिक विश्वसनीय पार्टी बनी है तथाजिसकोकरोड़ों लोगों ने अपनाकर विश्व का सर्वोच्च दल बनाया है।

आज की पीढ़ी को यह जानना चाहिए कि 1980 के दशक का कालखंड भारतीय राजनीति का टर्निंग प्वाइंट था, जब भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। देश के राष्ट्रवादी समूहों ने एक सपना देखा था, जिसमें भारतीय गौरव की पुनर्स्थापना, भारत के आध्यात्मिक उत्कर्ष, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के विचार-बीज थे। आज वे बीज फलदार बृक्ष हो चुके हैं। 45 साल में वे सारे सपने साकार हो चुके हैं। राजनीतिक क्षेत्र में यह आश्चर्य का विषय हो गया है कि कैसे एक पार्टी 2 सीटोंसे अपनी यात्रा शुरू करते हुए सबसे बड़े लोकतंत्र की सबसे बड़ी पार्टी बनकर आज राजनीति के प्रतिमान बदल रही है। पार्टी विद डिफरेंस के नारे को मूर्त रूप देकर कार्यकर्ताओं ने सारी दुनिया को सियासत का अनूठा स्वरूप दिखाया है।

हालांकि भाजपा का गठन 6 अप्रैल, 1980 को हुआ, परन्तु इसका अतीत भारतीय जनसंघ से जुड़ा है। स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश विभाजन के बादबढ़ते अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, लाइसेंस-परमिट-कोटा राज, राष्ट्रीय असुरक्षा, राष्ट्रीय मसलों जैसे कश्मीर आदि पर घुटनाटेक नीति, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारतीय हितों की अनदेखी आदि अनेक मुद्दों के गर्भ से जनसंघ का जन्म हुआ था। आपातकाल के बाद भाजपा की स्थापना सुदृढ़, सशक्त, समृद्धएवं स्वावलम्बी भारत के निर्माण हेतु की गई थी, जिसमें पार्टी ने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जो आधुनिक दृष्टिकोण से युक्त एक प्रगतिशील एवं प्रबुद्ध समाज का प्रतिनिधित्व करता हो तथा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल्यों से प्रेरणा लेकर'विश्व गुरू' के रूप में विश्व पटल पर स्थापित हो। साथ ही संविधान सम्मत सभी नागरिकों को राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, समान अवसर सुनिश्चित हो।पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म-मानवदर्शन' को अपना वैचारिक दर्शन मानते हुए भाजपा ने अंत्योदय, सुशासन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, विकास एवं सुरक्षा के संकल्प पर चलते हुए 45 सालकी अनुपम यात्रा पूरी की है। इस यात्रा में दीनदयाल जी के अंत्योदय से लेकर मोदी जी के सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास जैसा अद्वितीय संकल्प पूर्ण हुए हैं।

भाजपा के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अन्तर्गत गरीबी मिटाना केवल नारा नहीं, उसका संकल्प था। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण कोई भाषण नहीं, प्रतिबद्धता थी। कश्मीर में 370 की समाप्ति चुनावी जुमला नहीं, राष्ट्रीय एकात्मताका साक्षात संकल्प था। अन्त्योदय स्लोगन नहीं, यह गरीबों का जीवन स्तर उठाने का प्रण था, जिसे पार्टी का हर कार्यकर्ता 1980 से लेकर अब तक पूर्ण करने में सक्रिय हैं। अटल जी की सरकार द्वारा विपरीत परिस्थितियों में परमाणु परीक्षण हो, कारगिल विजय हो या नरेद्र मोदी जी द्वारा कश्मीर में 370 की समाप्ति हो, श्रीराम मंदिर निर्माण हो या वक्फ बोर्ड कानून में बदलाव हो, ये भाजपा की राजनीति में वे मील पत्थर हैं, जो संकल्प से सिद्धि का मंत्र बनकर पीढियों को प्रेरित करते रहेंगे।

आज स्थापना दिवस के प्रसंग में भाजपा के उत्कर्ष में अमूल्य योगदान देने वाले नेतृत्व की चर्चा जरूरी है। अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर नरेंद्र मोदी तक पार्टी नेताओं ने संकल्प और साहस का नया इतिहास रचा है। भारत को परमाणु शक्ति बनाने से लेकर चंद्रयान-मंगलयान की यात्रा तक की उपलब्धि चुनावी राजनीति से अलग एक अदम्य साहस और देशभक्त नेतृत्व का प्रमाण है।2014 से लेकर 2025 तक गरीबों के मसीहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने अपने सभी संकल्पों को एक-एक करके पूर्ण करते हुए भारत को सशक्तबनाया है।आज भारत के लगभग सभी तीर्थ केंद्र विकास का नया प्रतिमान गढ़ रहे हैं। निरंतर उपेक्षा का दंश झेल रहे हमारे प्राचीन आध्यात्मिक केंद्रोंका गौरव भी पुनर्स्थापित हुआ है।

यही नहीं, भाजपा ने अपने वैचारिक आचरण से देश की राजनीतिक संस्कृति को भी बदला है।एक ओर जहां परिवारवादी, तुष्टिकरण और जातिवादी राजनीति का दौर समाप्त हो गया, वहीं अब धर्म-संस्कृति की बात करना सांप्रदायिक होना नहीं है। राष्ट्रवाद की चर्चा अब संकुचित मानसिकता का परिचायक नहीं है। सरकार की ओर से देवालयों का विकास करना, अब ध्रुवीकरण नहीं है। भारतीयता की बात करना और मातृभाषा में काम करना अब पिछड़ापन नहीं है। हिन्दुत्व का विचार अब सर्वग्राही बन गया है। अपनी प्रखर व प्रतिबद्ध कार्यशैली से भाजपा ने देश के राजनीतिक विमर्श को परिवर्तित करने में ऐतिहासिक सफलता पायी है। इस पड़ाव पर भाजपा अपनी पंचनिष्ठाओं की नींव पर न केवल गर्व सेस्वयं खड़ी है बल्कि उसके सहयोगी दल भी उसके साथ कंधा मिलाकर खड़े हैं। अभी-अभी वक्फ बोर्ड कानून संशोधन मामले में सारी दुनिया ने देखा है।

राज्य भाजपा इकाई का अध्यक्ष होने के नाते अपने अनुभव से कह सकता हूं कि विजन, संगठन, नेतृत्व और कार्यकर्ता- इन चारों अंगों के कारण भाजपा कैडर आधारित पार्टीबनी है। अटल जी, लालकृष्ण आडवानी जी, नरेंद्र मोदी जी, अमित शाह जी और जय प्रकाश नड्डा तक पार्टी का नेतृत्व करने वाले अनेक लोग इसी कैडर की गंगोत्री से निकले हैं। आज नरेंद्र मोदी के चमत्कारिक नेतृत्व ने भाजपा के विजन और संगठन का अतुल्य विस्तार किया है तो पार्टी की विकास- यात्रा में गृह मंत्री अमित शाह का योगदान भी स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो चुका है। राष्ट्रीय अध्यक्ष के तौर पर उनके कुशल नेतृत्व में पार्टी ने असंभव को संभव किया है और आज पूर्वोत्तर भारत में भी भाजपा की सरकारें हैं, तो उसके पीछे अमित शाह जी का परिश्रम और संकल्प ही है। उनके नेतृत्व में पार्टी को विश्व का सबसे बड़ा दल बनने का गौरव भी मिला है। इस प्रसंग में यह भी कहना चाहिए कि गृह मंत्री अमित शाह ने न केवल पार्टी को शिखर पर पहुंचाया है, अपितु कश्मीर को 370 से मुक्त कराकर, नागरिकता कानून व वक्फ कानून में संशोधन कराकर देश की राष्ट्रीय अखंडता का आदर्श प्रतिमान गढ़ा है।

लगातार सत्ता में रहने के बावजूद विगत मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ताओं ने नरेंद्र मोदी और अमित शाह के चमत्कारिक नेतृत्व में पार्टी को प्रचंड बहुमत दिलाया। हम यहां लोकसभा की सभी सीटें जीते हैं और राज्य का हर बूथ मजबूत बनकर सारा संगठन नयी ऊर्जा से ओत प्रोत है। इसलिए 45 वें स्थापना दिवस पर हर बूथ पर कार्यकर्ता सम्मेलन और गांव चलो बस्ती चलो अभियान चलाया जा रहा है। हमारे दोनों नेताओं ने यह सिद्ध किया है कि यदि राजनीति की ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बनाया जाए और मूल्यों एवं आदर्श के साथलोकमंगल की भावना से कार्य किया जाए तो एक समर्थ समाज और सशक्त देशबनाया जा सकता है।

ब्रह्मलीन दिवस: स्वामी अवधूतानंदजी

वीरेंद्र व्यास

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

जीव, जगत और जगदीश का संदेश देने वाले महान संत

मनुष्य जीवन की सार्थकता आध्यात्मिक ज्ञान में हैं और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति योग से, ध्यान से, भक्ति से पाई जा सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग श्रीमद् भगवत गीता में बताया गया है। गीता माया रुपी जगत के अनित्य होने तथा आत्म तत्व के नित्य होने, आत्मा के शाश्वत होने के संबंध में विस्तार से प्रकाश डालती है। अर्जुन जैसे जिज्ञासु के प्रश्न जहां जीव जगत में अनादि काल से चले आ रहे हैं। हमारी भारतीय श्रुति और स्मृति परंपरा में पौराणिक और वैदिक काल से मनीषियों ने इस जिज्ञासाओं के उत्तर खोजने की दिशा में सतत प्रयास किए हैं। समय-समय पर अनेक विद्वान मनीषियों ने इस जगत में आकर आध्यात्मिक ज्ञान की पिपासा को शांत करने के उपक्रम किया है।

ऐसे ही एक महान संत स्वामी अवधूतानंद जी हुए हैं जिन्होंने आत्म तत्व की प्राप्ति और आध्यात्मिक मार्ग के अनुसरण को मनुष्य जीवन का मूल उद्देश्य बताते हुए अपने भक्तों एवं शिष्यों के वृहत समुदाय को इसी दिशा में सदैव प्रयत्नशील रहने के लिए प्रेरित और सक्रिय किया। स्वामी जी ने ही इस ज्ञान प्रवाह को चिरंतर बनाए रखने के लिए विज्ञान आश्रम के रूप में वृंदावन एवं इंदौर में दो आश्रम स्थापित किए थे।

वृंदावन उनकी आध्यात्मिक तपोभूमि थी तो पूरा देश ज्ञान परंपरा को स्थापित करने की कार्यस्थली। वे केवल शहरों तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि झाबुआ जैसे अपेक्षाकृत पिछड़े आदिवासी अंचल तक पहुंचे। वैसे इस आदिवासी क्षेत्र में रामायण की चौपाइयां, कबीर, मीरा, तुलसी के भजन गांव-गांव में चौपाल तक पहुंच चुके थे। घरों तथा मंदिरों के प्रांगण में कीर्तन, भजन गूंजा करते थे लेकिन सुदूर ग्रामीण अंचलों में पहुंचकर स्वामी अवधूतानंद जी ने भक्ति की कीर्तन धारा को आध्यात्मिक ज्ञान के गुढ़ उपदेशों की ओर मोड़ दिया।

श्रद्धालुओं के सहज दैनिक कार्य व्यवहार की जिज्ञासाओं को सुनते और उनका समाधान बताते हुए उन्होंने सभी के लिए ज्ञान का ऐसा मार्ग खोल दिया जो स्वयं को जानने तथा आत्म और परमात्मा के एकात्म का आधार बना।

उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के आत्म तत्व और अनात्मतत्व के भेद को समझाते हुए साक्षरता की कमी का क्षेत्र माने जाने वाले मध्य प्रदेश के झाबुआ-पेटलावद अंचल में 1960 के दशक से लेकर 1990 के दशक तक ज्ञान मार्ग की अवधारणा को लोगों तक पहुंचाया। आत्म तत्व क्या है, मनुष्य जीवन की सार्थकता क्या है, तुम कौन हो, तुम जिस नाम से पुकारे जाते हो तुम वह हो या यह तुम्हारे शरीर का नाम है और तुम जड़ तथा चेतन सभी को जानने वाले आत्म स्वरूप परम तत्व हो, परमात्मा हो, शिवोहम हो यानी कि कल्याण स्वरूप आत्मा हो। सत चित् आनंद और अस्ति भाति प्रिय के रूप में मनुष्य के अस्तित्व और उसके जीवन को तथा उसके जीवन के उद्देश्य को स्वामी जी ने बार-बार अभ्यास से लोगों को समझाया था।

आत्म तत्व की पहचान ही मनुष्य जीवन को सार्थक बनाती है और गीता के उपदेश को जीवन में उतारने में सक्षम बनाती है। हालांकि ज्ञान मार्ग का यह प्रवचन गूढ अर्थ लिए होता था तथा अक्सर अबूझ सा प्रतीत होता था लेकिन बार-बार के अभ्यास द्वारा उन्होंने गूढ़ को सहज बनाने में मदद की। इस तरह वे ऐसे सदुरु सिद्ध हुए जिन्होंने शक्तिपात द्वारा नहीं बल्कि अभ्यास द्वारा अपने शिष्यों, भक्तों और ज्ञान के आकांक्षी वर्ग को धर्मपथ पर अग्रसर किया। इस तरह स्वामी जी जीव, जगत और जगदीश के रास्ते पर लोगों को ले जाने के काम में जीवन भर प्रयत्नशील रहे।

ज्ञान किताबों को पढ़ कर पाया जा सकता है लेकिन उसका आचरण में पालन ही ज्ञानवान की पहचान है। इस जीवन ध्येय को रचने वाले संत अवधूतानंद जी 6 अप्रैल 1996 को ब्रह्मलीन हुए।

स्वामी जी स्वयं बहुत अच्छा गाते थे तथा हारमोनियम भी बहुत अच्छा बजाते थे और निश्चित ही स्वामी जी जब कभी भी किसी भी सत्संग, भजन या सार्वजनिक उपदेश के आयोजन में पहुंचते थे तो भक्ति ज्ञान गीत व संगीत का एक अनूठा संगम लोगों को दिखाई और सुनाई देता था। उन्होंने आध्यात्मिक विषयों पर तथा भजन संग्रह आदि के रूप में 100 से भी अधिक पुस्तकों के रचना की। उन्होंने स्वयं को अपने भक्ति गीतों व कविताओं का रचनाकार घोषित नहीं किया बल्कि अपने गुरुदेव विज्ञानानंदजी के नाम से प्रस्तुत करते हुए हर भजन के अंत में विज्ञान शब्द को जोड़ा। यह उनके निस्पृह भाव युक्त होने तथा प्रसिद्धि से विरक्ति का प्रतीक कार्य है। उनके एक प्रसिद्ध भजन की इन पंक्तियों से उनके चरणों में हम शिष्यों की श्रद्धा अर्पण-

निज देश धर्म की वेदी पर विज्ञान ये तन, मन, धन जाए।
हो ज्ञानी, ध्यानी, शीलवान पर हित जीना मरना सीखें।

श्रीराम: मर्यादा पुरुषोत्तम का आदर्श जीवन

श्री राम नवमी विशेष पर

अमित राव पवार

लेखक साहित्यकार हैं।

त्रेतायुग में श्री हरिविष्णु ने अपने सातवें अवतार के रूप में हिंदू पंचांग अनुसार,चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को,अयोध्या नरेश राजा दशरथ और माता कौशल्या के यहाँ, दोपहर 12:00 बजे प्रभु श्रीराम के रूप में जन्म लिया। वे मानव रूप में पूजे जाने वाले पहले देवता हैं। इसी कारण इस दिन को श्रीरामजन्मोत्सव 'राम नवमी' के रूप में उल्लासपूर्वक मनाया जाता है हमारे पूर्वजों से हम अक्सर सुनते आए हैं कि रामराज्य में प्रजा अत्यंत सुखी और संतुष्ट थी। पौराणिक मान्यता के अनुसार,श्रीराम ने 11,000 वर्षों तक प्रजा की सेवा की, इसलिए उस युग को 'रामराज्य' कहा जाता है।

श्रीराम- प्रेम, मर्यादा और सेवा के प्रतीक- प्रभु श्रीराम ने संसार को प्रेम, मर्यादा और सेवा का सबसे सुंदर संदेश दिया। उन्होंने वनवासी,आदिवासी,दलित और पिछड़े वर्गों को संगठित कर समाज में समरसता और एकता का सूत्रपात किया। उन्होंने जनजातीय,पहाड़ी और समुद्री क्षेत्रों में सत्य,करुणा और धर्म का संदेश प्रसारित किया। त्रेतायुग में माता शबरी और श्रीराम के मिलन से सिद्ध होता है कि सनातन हिंदू धर्म ने कभी छुआछूत को मान्यता नहीं दी। यद्यपि विभिन्न आक्रांताओं ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाकर समाज में भेदभाव फैलाने की कोशिश की, किंतु हिंदू धर्म ने सदैव समता और समानता को ही प्राथमिकता दी। श्रीराम ने अपनी 27 वर्ष की आयु में 14 वर्षों का वनवास स्वीकार किया, किंतु कभी किसी से द्वेष नहीं रखा। उनके संघर्षमयी जीवन से आज के युवाओं को यह प्रेरणा मिलती है कि कठिनाइयों से घबराने के बजाय उन्हें धैर्य और कर्तव्यनिष्ठा से पार करना चाहिए।

रामराज्य- आदर्श समाज की संकल्पना* श्रीराम का जीवन इस बात का प्रमाण है कि कठिनाइयों के बावजूद मर्यादा और आदर्शों का पालन किया जा सकता है। उनके नामकरण संस्कार के समय महर्षिवशिष्ठ ने उन्हें 'राम' नाम दिया, जबकि उनका वास्तविक नाम 'दशरथ राघव' रखा गया था श्रीराम,माता सीता और संपूर्ण परिवार का जीवन हमें यह सिखाता है कि परिवार का संचालन कैसा होना चाहिए। किंतु आज के समाज में त्रेतायुग की झलक बहुत कम देखने को मिलती है, जो चिंता का विषय है। यदि हमें अपने परिवारों में समरसता और स्नेह बनाए रखना है, तो हमें श्रीराम और माता सीता के आदर्शों को अपनाना होगा। वनवास के दौरान माता सीता ने महिलाओं को आत्मनिर्भरता और कर्तव्य परायणता का संदेश दिया। आज भी स्त्री सशक्तिकरण को देखा जा सकता है,जहाँ महिलाएँ परिवार की ज़िम्मेदारियों के साथ-साथ व्यवसाय और समाज-कल्याण में भी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

रामायण से वर्तमान में सीख- रामायण काल में भरत ने 14 वर्षों तक राज्य का कार्य श्रीराम की चरण पादुका को रखकर किया, किंतु आज के समाज में पारिवारिक रिश्तों में यह समर्पण और त्याग कम होता जा रहा है। अधिकांश परिवारों में संपत्ति और अधिकारों को लेकर भाई-भाई के बीच विवाद उत्पन्न हो रहे हैं, जो समाज के लिए घातक है।

भगवान विष्णु ने विशेष उद्देश्य से श्रीराम के रूप में अवतार लिया था- धर्म की स्थापना और समस्त मानव जाति समानता को स्थापित करना था। रावण का अंत इस सत्य को प्रमाणित करता है कि अहंकार का नाश निश्चित है। रावण अत्यंत ज्ञानी था,लेकिन उसका अहंकार ही उसके पतन का कारण बना। इसके विपरीत, श्रीराम उच्च कोटि के ज्ञान के बावजूद विनम्र बने रहे। आज के समय में भी हम देख सकते हैं कि थोड़ा-सा धन,पद या प्रतिष्ठा मिलने पर लोग अहंकार में डूब जाते हैं और मिथ्या वचन बोलने से भी नहीं हिचकिचाते। जबकि सच्चे सज्जन व्यक्ति कभी दिखावा नहीं करते।

निष्कर्ष- श्रीराम केवल एक पौराणिक चरित्र नहीं,बल्कि जीवन जीने की कला का प्रतीक हैं। उनका आदर्श हमें सिखाता है कि जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं,हमें सदा धर्म,मर्यादा और कर्तव्य के पथ पर चलना चाहिए आज,यदि हम अपने परिवारों और समाज में श्रीराम और माता सीता के आदर्शों को अपनाएँ, तो निश्चित रूप से हम एक सशक्त, नैतिक और आदर्श समाज की स्थापना कर सकते हैं।

रामनवमी विशेष

मुरलीधर चांदनीवाला

लेखक साहित्यकार हैं।

श्रीराम मनुष्य जीवन के आचार्य हैं

हर श्रीराम केवल अयोध्या के नहीं है, केवल भारत के भी नहीं, वे सम्पूर्ण पृथ्वी के हैं। वे राजवंश के होकर भी जन-जन के हैं, सबके प्राणों में बसे हुए हैं। वे भगवान् मान लिये गये हैं, लेकिन वे स्वयं अपनी दृष्टि में मनुष्य हैं। उनके सब अभ्यास मनुष्य होने के लिये हैं। उनका चरित्र हमें यह बताता है कि मनुष्य यदि सचमुच मनुष्य हो, तो वह भगवान् ही है। प्रत्येक मनुष्य में भगवान् होने की विपुल सम्भावनाएँ हैं। वह एकनिष्ठ होकर प्रयास करे, तो भगवान् हुआ जा सकता है। श्रीराम का पावन चरित्र इसी बात का उदाहरण है।

श्रीराम मनुष्य जीवन के आचार्य हैं। वे रघुवंश की उस परम्परा के पोषक हैं, जो त्याग को ही जीवन का मूल्य मानती है। वे सत्य की रक्षा के लिये मितभाषी है। वे मत-मतान्तर से बहुत ऊपर हैं। उनके चित्त में कोई विरोध नहीं है, न परिवार के किसी सदस्य के प्रति, न प्रजा के प्रति, न किसी विचारधारा के प्रति। श्रीराम ने अपना धर्म नहीं चलाया। उन्हें इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। श्रीराम स्वयं धर्म है। 'रामो विग्रहवान् धर्म:', यह बात केवल राम के लिये ही कही जाती है। श्रीराम को जान लेने के बाद धर्म अव्यक्त नहीं रहता। इसलिये हमारे संत-महात्मा धर्मशास्त्र पढ़ने की अपेक्षा रामचरितमानस के अध्ययन और अनुशीलन की सलाह देते हैं। हमारे पूर्वज शायद बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे, शायद बहुत मंदिरों में नहीं गये हों, लेकिन वे रामचरितमानस में रमे हुए थे। रामचरितमानस ने ही उन्हें सनातन से जोड़कर रखा। रामचरितमानस ने ही उनके परम्परा-बोध को जगाये रखा। भले ही उन्होंने अपने लिये बहुत सारा धन न कमाया हो, लेकिन वे रामरतन धन को जतन से सहेजकर रखने वाले सच्चे वैभवशाली थे।

श्रीराम में हमारी आस्था अटूट है। श्रीराम सबको तारने वाले हैं। वे रावण को भी तारते हैं, बाली को भी। वे प्राणी मात्र की सम्पूर्ण मुक्ति चाहते हैं। एक वे ही हैं, जो अकेले अपनी नहीं, सब प्राणियों की मुक्ति के लिये पहल करते हैं। वे किसी की हानि होते हुए नहीं देखते, युद्ध में भी नहीं। अपने शत्रु के मान-सम्मान की रक्षा करने वाले श्रीराम सचमुच अनोखे हैं। अपने शुभचिंतकों के प्रति अत्यंत उदार और सहिष्णु श्रीराम अपनी मृदुल मुस्कान से सबका हृदय जीत लेते हैं। कोई भी बात, बहुत छोटी हो या बहुत बड़ी, श्रीराम बहुत सोचते हैं। वे कभी बोलने की जल्दी में नहीं होते, लेकिन उनकी भाव-भंगिमा सब कुछ बोल देती है। अपने सामने खड़े योद्धा को वे भरपूर अवसर देते हैं। वह कितना भी छोटा हो या निन्द्य हो, किन्तु श्रीराम की दृष्टि में वह मनुष्य होने के कारण श्लाघ्य है। वे यथासम्भव उसके लिये अभ्युदय के द्वार खुले

रखना चाहते हैं।

श्रीराम के जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक संघर्षशील और सत्याग्रही के जीवन में होते हैं। श्रीराम जीवन में एक बार भी कठिनाइयों से दूर नहीं भागे। उन्होंने 'सरल' और 'कठिन' में से सदैव कठिन को ही चुना। उनकी कठिनाइयाँ जितनी कठिनतर होती चली जाती, वे उतने ही संयमित और धैर्यवान् होते चले जाते। उन्हें न कभी अपने ऊपर क्रोध आया, न परिस्थियों पर। क्रोध उनके स्वभाव में ही नहीं था। शूर्पनखा के प्रसंग पर और रावण को परास्त करते समय भी श्रीराम के तेवर एकदम शान्त दिखाई देते हैं। जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

श्रीराम वर्ण व्यवस्था से कोई छेड़-छाड़ नहीं करते। उनकी दृष्टि में चारों वर्ण समान रूप से पूज्य हैं। वे सबके साथ समान व्यवहार करते हैं।श्रीराम को भी किसीका भय नहीं सताता। सत्य कभी किसीसे पराजित नहीं होता। श्रीराम भी कभी किसीसे पराजित नहीं होते। सत्य प्रत्येक स्थिति में शिव है, सुन्दर है। श्रीराम भी नित्य शिव है, सुन्दर हैं। श्रीराम के जीवन में हमें जो विरोधाभास दिखाई पड़ते हैं, वे हमारे विद्रोही मन के विरोधाभास हैं, इसलिये संतों ने उन्हें खारिज किया।

श्रीराम ने अपने जीवन में एक बार भी शक्ति प्रदर्शन नहीं किया। शक्ति का प्रयोग तभी किया, जब कोई दूसरा विकल्प शेष नहीं था। विरोधियों के मुँह बंद रखने के लिये वे अपनी ओर से कोई जतन नहीं करते, किसी तर्क में नहीं उलझते। उनका संगठन-कौशल अद्भुत है। वानरों की सेना को अपने एक संकेत पर संगठित करने वाले श्रीराम का पुरुषार्थ विलक्षण है। वे सहायता देना जानते हैं, तो सहायता लेना भी। वे कृतज्ञ होना जानते हैं। एक गिलहरी के प्रति उनकी जो कृतज्ञता है, उसे मापने का कोई पैमाना हमारे पास नहीं।

श्रीराम शैव भी हैं, शाक्त भी हैं। इन्द्र से उनका कोई वैर नहीं, न वे इन्द्र के प्रभाव में हैं। ऋषिकुलों में जाने से पहले उन्हें अपनी राजसी वृत्तियाँ नहीं त्यागनी पड़ती, क्योंकि वे वृत्तियाँ स्वयं श्रीराम के सामने दास्य भाव से खड़ी रहती हैं। श्रीराम हैं हमारे पास, तो हमें कहीं और भटकने की जरूरत ही नहीं। श्रीराम का चरित्र सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण नीति और सम्पूर्ण मुक्ति का ऐसा अक्षय कोश है, जो तब तक खाली नहीं होगा, जब तक सूर्य रहेगा, यह पृथ्वी रहेगी।

हार्टफुलनेस मेडिटेशन नि :शुल्क आज

बैतूल। हार्टफुलनेस मेडिटेशन संस्था के तत्वावधान में कल 6 अप्रैल, रविवार वृंदावन नगर, रानीपुर रोड में 9 से 10 सुबह, दोपहर 12 से 1, शाम 6 से 7 बजे तक ध्यान विशेषज्ञ गुरूओं के द्वारा निःशुल्क करवाया जाएगा। संस्था द्वारा बताया कि यह हृदय पर केन्द्रित होकर जीने की एक जीवनशैली हैं। जिसमें हृदय के गुण हैं करुणा, सन्तोष, स्पष्टता, सच्चाई, कर्मठता और क्षमा तथा इसके भाव हैं खुशी, आनंद,उदारता, स्वीकार्यता और प्रेम आदि है। हार्टफुलनेस अभ्यास से हमारा रवैया अत्यंत जीवंत हो उठता है और ऊर्जा एवं आनंद से भर जाते है। साथ ही आज के तनाव भरे जीवन में ध्यान बेहद आवश्यक है। आयोजक संस्था ने बताया यह उपक्रम निरंतर जारी रहेगा। संस्था ने सभी से लाभ लेने का आग्रह किया है।

श्रीराम जन्मोत्सव पर 9 किमी लंबी शोभायात्रा आज

बैतूल। श्रीराम जन्मोत्सव के पावन अवसर पर रघुवंशी समाज के सौजन्य से आज रविवार को शहर में 9 किलोमीटर लंबी भव्य वाहन शोभायात्रा निकाली जाएगी। वाहन रैली में श्रीरामजी की झांकिया, भजनों, ध्वजों और धार्मिकता से परिपूर्ण वातावरण की झलक देखने को मिलेगी। शोभायात्रा का शुभारंभ प्रातः 8:30 बजे न्यू बैतूल ग्राउंड स्थित हनुमान मंदिर से किया जाएगा। यहां से यह शोभायात्रा लल्ही चौक, बस स्टैंड, कारगिल चौक, रेलवे स्टेशन, बाबू चौक, कॉलेज चौक, कमानी गेट, दादावाड़ी होते हुए रघुवंशी मंगल भवन तक पहुंचेगी। मार्ग में जगह-जगह श्रद्धालुओं द्वारा स्वागत की तैयारी की गई है। रघुवंशी समाज की ओर से सभी सनातन धर्मप्रेमियों से इस शोभायात्रा में समय पर वाहन सहित शामिल होकर आयोजन को गौरवपूर्ण व ऐतिहासिक बनाने की अपील की गई है।

महाराष्ट्र से लाई जा रही अवैध शराब पकड़ी, एक गिरफ्तार

बैतूल। महाराष्ट्र से अवैध रूप से लाई जा रही 60 लीटर देशी शराब को पुलिस ने पकड़ा है। इस मामले में एक आरोपी को भी गिरफ्तार किया गया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 4 अप्रैल को देर रात तडक़े ग्राम मानी के पास की गई कार्यवाही में एक आरोपी को महाराष्ट्र से अवैध रूप से देशी शराब परिवहन करते हुए गिरफ्तार किया गया। मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति लाल-काले रंग की

पल्सर 125 सीसी मोटरसाइकिल से शराब लेकर ग्राम तामसार की ओर जा रहा है। थाना प्रभारी सुश्री बबीता धुर्वे के निर्देशन में सहायक उप निरीक्षक संतोष चौधरी, प्रधान आरक्षक भजनलाल चौहान तथा आरक्षक बीरबल मीणा के साथ टीम गठित कर ग्राम मानी और नढा के बीच मुख्य मार्ग पर घेराबंदी की गई। घटनास्थल पर एक मोटरसाइकिल चालक को पकड़ा गया, जिसके पास से सफेद प्लास्टिक बोरी और झोलों में कुल 576 नग सीलबंद देशी शराब के क्वार्टर बरामद किए गए। पुलिस ने कुल 60.480 लीटर देशी शराब, जिसकी अनुमानित बाजार कीमत 23,520 जप्त की है। गिरफ्तार आरोपी ने अपना नाम महेश पिता घनू घाडसे उम्र 25 वर्ष निवासी ग्राम तामसार, थाना झल्लार बताया। आरोपी शराब के परिवहन, विक्रय अथवा भंडारण हेतु कोई वैध लाइसेंस या दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सका। प्रकरण में आरोपी के विरुद्ध धारा 34(2) आबकारी अधिनियम के अंतर्गत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है। आरोपी को मौके पर विधिवत गिरफ्तार कर शराब व मोटरसाइकिल सहित थाने लाया गया तथा आवश्यक कार्रवाई उपरांत न्यायालय प्रस्तुत किया गया।

सेन महाराज की प्रतिमा चोरी मामला

बैतूल। सेन समाज संघ सारणी द्वारा मुख्यमंत्री के नाम से अनुविभागीय अधिकारी को सेन समाज के आराध्य संत श्री सेन महाराज की मूर्ति चोरो को गिरफ्तार कर कार्यवाही करने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा। इस संबंध में संगठन की सारणी इकाई के अध्यक्ष संतोष नगदे ने बताया कि काशी तालाब के समीप सेन पार्क मे स्थापित सेन समाज के संत श्री सेन जी महाराज की मूर्ति 26 मार्च की रात्रि में किसी अज्ञात असामाजिक व्यक्तियों चोरी कर ली गई है। हम

सभी सेन बधु इस घटना से अत्यंत दुखी व आक्रोशित है और मांग करते है कि इस प्रकार के समाज विरोधी व्यक्तियो को शीघ्र अति शीघ्र गिरफ्तार कर कड़ी से कड़ी सजा दी जाए और सेन मंदिर का निर्माण करने कि अनुमति प्रदान करने कि कृपा करे जिससे भविष्य में ऐसी घटना न हो। साथ ही ज्ञापन में मांग की गई है कि सारणी पाथाखेड़ा बगडोना मे सेन जी महाराज की स्थापना शासकीय महाविद्यालय दो वर्ष पूर्व पहले खुले में स्थापित की है।

कई सालों से नपा को नहीं मिली प्रतिपूर्ति राशि, आर्थिक स्थिति पर पड़ रहा असर

पंचायतों में आग से निपटने संसाधन नहीं, नपा की दमकलों के भरोसे ग्रामीण क्षेत्र

बैतूल। गर्मी में आगजनी की घटनाएं बढ़ने लगी हैं और सर्वाधिक घटनाएं ग्रामीण क्षेत्रों में सामने आती है, यहां खेतों में खड़ी फसल और मकानों में आग लगने पर लोगों को स्वयं ही आग बुझाने के प्रयास करने पड़ते है या नगरपालिका की दमकल वाहनों के भरोसे आग पर काबू पाया जाता है, क्योंकि जिले की जनपद पंचायतों के पास आगजनी जैसी घटनाओं पर काबू पाने के लिए दमकल वाहन नहीं है। जब तक दमकल टीम वाहन के साथ मौके पर पहुंचती है तब तक सभी कुछ जलकर खाक हो जाता है। इस तरह की घटनाएं हर साल ग्रामीण क्षेत्रों में सैकड़ों की संख्या में होती है, इसके बाद भी पंचायत स्तर पर आग बुझाने फायर वाहन की व्यवस्था नहीं की जा रही है। कुछेक पंचायतों में पानी टैंकर से ही आग पर काबू पाया जाता है, लेकिन सभी पंचायतों के पास टैंकर भी उपलब्ध नहीं। जबकि गर्मी के दिनों में आगजनी की घटना बढ़ जाती है। आकस्मिक रूप से सामने आने वाली अनेक आपदाओं में अग्नि दुर्घटना भी अतिसंवेदनशील है, जो आमतौर पर बड़े-छोटे गांवों में आए दिन सामने आती है। इससे निपटने का प्रबंधन आवश्यकतानुसार व्यापक होता है, किंतु पंचायत स्तर पर कहीं भी फायर ब्रिगेड उपलब्ध नहीं है।

सिर्फ नगरपालिकाओं में ही मौजूद फायर वाहन- जिले की नगरपालिकाओं में ही फायर वाहन मौजूद है। यहां भी वर्षों पहले दमकल वाहन खरीदे गये थे, जिनमें से अधिकांश वाहनों की हालत खस्ताहाल हो चुकी है। यदि बैतूल नगरपालिका की बात करे तो बैतूल नगरपालिका के पास सिर्फ 3 फायर ब्रिगेड हैं। इनमें से एक छोटा क्रिक रिस्पॉन्स व्हीकल है, जिसकी टैंक क्षमता 400 लीटर से बढ़ाकर 800 लीटर की गई है। इसके बावजूद शहर में आग बुझाने के पर्याप्त इंतजाम नहीं हैं। दो फायर ब्रिगेड कंडम हो चुकी हैं। जिले में 13 फायर ब्रिगेड हैं। सारनी और मुलताई में 2-2, आमला, भैंसदेही, शाहपुर, घोड़ाडोंगरी, चिचोली और आठनेर में 1-1, जबकि बैतूल में 3 फायर ब्रिगेड हैं।

ग्रीष्मकाल में होती है अधिक आगजनी- आग लगने की घटनाएं गांवों में गर्मी के दिनों में सबसे ज्यादा होती है। विशेषकर रबी फसल की कटाई के चलते कटी हुई फसल खलिहानों में किसान एकत्रित करते हैं। घास की गंजियां भी खलिहान परिसर के समीपस्थ लगी रहती हैं। खलिहान अक्सर ऐसे स्थानों पर होते हैं जहां थ्रेसिंग के लिए बिजली लाइन की सुविधा समीप में होती है। ऐसे में लाइन के तार टूटने, आपस में टकराकर फाल्ट होने, थ्रेसिंग आदि उपकरणों में संयोजन का जुगाड़ करने के साथ ही खलिहानों में काम करते बीड़ी-पीने आदि के दौरान असावधानिवश आग लगने की घटना सामने आती है। जिससे पीड़ित को हजारों लाखों का नुकसान झेलना पड़ता है।

आगजनी की घटनाओं को लेकर लापरवाही क्यूं - आगजनी की घटनाएं कोई नई नहीं है। आबादी क्षेत्र में वृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक संख्या में सामने आती है किंतु सवाल यह खड़ा होता है कि आपदा प्रबंधन के अंतर्गत गर्मी आरंभ होने के साथ जलसंकट और वर्षा पूर्व बाढ़ नियंत्रण जैसे हालातों से निपटने की कार्ययोजना बनाकर उस पर काम किया जाता है। फिर ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली आगजनी जैसे अतिसंवेदनशील विषय पर विचार-विमर्श क्यों नहीं होता, जबकि जनपद पंचायत स्तर पर कम से कम एक दमकल और पंचायत स्तर पर छोटे कंप्रेसरयुक्त टैंकर की व्यवस्था की जा सकती है। ताकि तत्काल आगजनी होने पर मदद मिल सके।

नपा को नहीं मिलती प्रतिपूर्ति व्यय

जनपद और पंचायतों में आग पर काबू पाने के लिए नगरपालिका की फायर वाहनों की सेवाएं ली जाती है। जिसके बदले नगरपालिका को व्यय प्रतिपूर्ति राशि मिलती है। लेकिन यह राशि नगरपालिका को नहीं मिल रही है। ऐसे में नगरपालिका को अतिरिक्त भार वहन करना पड़ रहा है। नपा कर्मचारियों की माने तो वे आग बुझाने के लिए दमकल वाहन नगरपालिका क्षेत्र के अलावा आसपास ग्रामीण क्षेत्रों को भी कवर करता है। इस पर डीजल, मेंटेनेंस तथा कर्मचारियों की सैलरी पर हर माह लाखों रुपए का खर्च आता है, लेकिन ग्रामीण इलाकों की सेवा के लिए मिलने वाली राशि आज तक नहीं मिली। इसका सीधा-सीधा असर नगरपालिका की आर्थिक स्थिति पर पड़ रहा है। जानकार बताते है कि निकाय सीमा के बाहर फायर बिग्रेड वाहन का उपयोग किए जाने पर दरें निर्धारित की है। यह दरे करीब 23 रूपये प्रति किमी है और नगरपालिका हर साल नगरीय निकाय की सीमा के बाहर फायर वाहन जाने पर खर्च की राशि का बिल जिला पंचायत को भेजती है, लेकिन यह राशि नगरपालिका को कई से नहीं मिली है।

इनका कहना है -

आगजनी की जानकारी मिलने पर नपा की दमकल वाहन ग्रामीण क्षेत्रों में भी जाती है, लेकिन नपा को प्रतिपूर्ति व्यय की राशि नहीं मिली है। दमकल बाहर जाने पर नपा ही सारे खर्च वहन करती है।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नगर पालिका बैतूल

जनपद पंचायतों द्वारा दमकल वाहन खरीदने को लेकर अभी कोई प्लान नहीं है। भविष्य में शासन से ऐसे कोई आदेश मिलते है तो आदेशानुसार कार्य करेगे। जहां तक नपा को प्रतिपूर्ति राशि के भुगतान की बात है तो हम नपा से इस संबंध में चर्चा कर लेगे।

- अक्षत जैन, सीईओ, जिला पंचायत बैतूल

सीएमसीएलडीपी के छात्र जल संरक्षण को लेकर कर रहे जनजागरण

दीवार लेखन और जल चौपालों से दे रहे जल बचाने के प्रेरणादायक संदेश

बैतूल। जल गंगा संरक्षण अभियान के अंतर्गत मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम सीएमसीएलडीपी से जुड़े छात्र-छात्राएं जिले के विभिन्न ग्रामों में जल संरक्षण को लेकर लोगों को जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं। जन अभियान परिषद बैतूल के मार्गदर्शन में यह गतिविधियां संचालित की जा रही हैं, जिनका उद्देश्य जल संचय और जल संवर्धन के महत्व को जन-जन तक पहुंचाना है। इस अभियान के तहत छात्र-छात्राएं अपने-अपने प्रयोगशाला ग्रामों में दीवार लेखन और छोटी-छोटी जल चौपालों के माध्यम से ग्रामीणों को जल बचाने के सरल और प्रभावशाली उपायों से अवगत करा रहे हैं। दीवारों पर जल संरक्षण से जुड़े नारे जैसे जल ही जीवन है, पानी की बूंद-बूंद अनमोल है, आओ मिलकर पानी बचाएं, भविष्य को सुरक्षित बनाएं आदि लिखे जा रहे हैं, जो आमजन का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।

जन अभियान परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने बताया कि जिले के चिचोली, शाहपुर और मुलताई विकासखंडों में परिषद की नवांकुर संस्थाओं, एमएसडब्ल्यू के छात्र-छात्राओं तथा मेंटर्स द्वारा मिलकर यह कार्य संचालित किया जा रहा है। उनका कहना है कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों में जल के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना है ताकि वे स्वयं जल संचय की दिशा में कदम उठा सकें। जल चौपालों के माध्यम से छात्र जल संरक्षण के पारंपरिक और नवीन तरीकों जैसे वर्षा जल संचयन, टपक सिंचाई, तालाबों और कुओं का संरक्षण, घरों में रिसाव रोकने जैसे विषयों पर ग्रामीणों के साथ संवाद कर रहे हैं।

8 से 11 अप्रैल तक ऑडिटोरियम ग्राउंड में लगेगा पुस्तक मेला

पुस्तकों एवं कापियों पर मिलेगी 15 प्रतिशत तक की छूट, एनसीईआरटी पर 2.5 प्रतिशत की रियायत

बैतूल। जिले में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और विद्यार्थियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शनिवार को दोपहर 12 बजे जिला पंचायत के सभाकक्ष में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता अपर कलेक्टर राजीव रंजन श्रीवास्तव ने की। बैठक में शिक्षा विभाग से जुडे वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ जिले के पुस्तक विक्रेताओं, अशासकीय स्कूलों के प्राचार्यों एवं संस्था प्रमुखों ने भाग लिया। बैठक में अपर कलेक्टर श्री श्रीवास्तव ने बच्चों की पुस्तकों की कीमतों में बढ़ोत्तरी पर चिंता जताई और इसे नियंत्रित करने के लिए विशेष छूट पर पुस्तकें उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। इसके अलावा बच्चों को शासन के नियमानुसार उम्र के अनुसार प्रवेश देने की अनिवार्यता पर बल दिया गया। शाला अभिलेखों का सही संधारण, बच्चों के बस्ते के वजन को शासन की गाइडलाइन के अनुसार सीमित रखने और कढ़ाई से पालन करने के निर्देश दिए गए। विद्यालयों द्वारा ली जाने वाली फीस को शासन के निर्देशों के अनुसार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। वहीं स्कूल बसों की फिटनेस एवं सुरक्षा मानकों की भी समीक्षा की गई। एसडीएम श्री राजीव कहार द्वारा पुस्तक विक्रेताओं से पुस्तकों व कापियों पर विशेष छूट देने का आग्रह किया गया, जिसे स्वीकारते हुए पुस्तक विक्रेताओं ने मेला अवधि में कक्षा नर्सरी से 12वीं तक के छात्रों हेतु 15 प्रतिशत की छूट तथा पाठ्य-पुस्तक निगम एवं एनसीईआरटी की पुस्तकों पर 2.5 प्रतिशत की छूट देने पर सहमति जताई गई।

ऑडिटोरियम में आयोजित होगा पुस्तक मेला

जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.अनिल कुशवाहा ने बताया कि यह पुस्तक मेला 8 अप्रैल से 11 अप्रैल 2025 तक बैतूल के ऑडिटोरियम ग्राउंड में आयोजित किया जाएगा। इस दौरान जिले के समस्त शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं उनके पालकों को छूट का लाभ लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। जिला शिक्षा अधिकारी ने समस्त पालकों एवं छात्रों से अपील की है कि वे इस पुस्तक मेला का अधिक से अधिक लाभ उठाएं और पुस्तक मेला में छूट का फायदा लेकर बच्चों की शिक्षा को सशक्त बनाएं। बैठक में डीपीसी जितेन्द्र कुमार भनारिया, सीएमओ सतीश मटसानिया, एडीपीसी सुबोध शर्मा, द्वारा शासन के समस्त आदेशों की विस्तृत जानकारी दी,बीईओ आशीष नवीन प्रहलादी, बीईओं आमला प्रजापति, एपीसी राजेश कुमार तुरिया, एपीसी कुशलेश धाड़से, एपीसी डीडी धोटे, जिले के पुस्तक विक्रेताओं, अशासकीय विद्यालयों के प्राचार्यगण एवं स्कूल संचालकों प्रमुख उपस्थित रहे।

रामनवमी के पूर्व भगवा वाहन रैली निकाली, पुलिस व्यवस्था चाक-चौबंद

सुबह सवेरे सोहागपुर। रामनवमी के पूर्व भगवा वाहन रैली निकाली गई। भगवा रैली के कारण पुलिस ने चाक-चौबंद इंतजाम किए थे। रैली के आगे पुलिस का वाहन एवं अंत में प्रशासनिक अधिकारियों के वाहन चल रहे थे। उल्लेखनीय है कि सोहागपुर में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का जन्म उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इसी तारतम्य में रामनवमी की पूर्व संध्या पर प्रतिवर्षानुसार भगवा वाहन रैली नर्मदापुरम पिपरिया राज्य मार्ग पर स्थित शंकर पार्वती मंदिर से प्रारंभ होकर ,रामगंज तीगड्डा, रामगंज रिपटा,खेड़ापति मंदिर मातापुरा , बिहारी चौक, कन्या शाला रंगीराम चौराहा, पुराने थाने के सामने होकर श्रीराम चौराहा, पलकमती नदी पुल मारूपुरा ,स्टेशन तीगड्डा, शास्त्री चौक ,बैंक चौराहा, पलकमती नदी पुल, श्रीराम चौराहा, कमानिया गेट, बिहारी चौक , बड़ी मस्जिद के सामने से होकर रामगंज रिपटे से होकर वापिस रामगंज टिगड्डा पहुंची, जायसवाल पेट्रोल पंप से होकर शास्त्री चौक बैंक चौराहा पर विर्सजित हुई ।श्री राम जन्मोत्सव समिति के सदस्य अधिवक्ता शिवकुमार पटेल ने वाहन रैली में शामिल सभी नागरिकों , युवाओं, मातृशक्ति का आभार व्यक्त किया। रैली में भारी संख्या में गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

विश्व मांगल्यसभा ने कुमकुमार्चन से की शक्ति की आराधना

ग्राम नाहिया में हुआ अभिषेक, महिलाओं ने जल संरक्षण की ली शपथ

बैतूल। चैत्र नवरात्रि के पावन अवसर पर अखिल भारतीय महिला जन संगठन विश्व मांगल्यसभा की बैतूल शाखा के धर्म शिक्षा विभाग की ओर से शक्ति की आराधना हेतु विशेष आयोजन किया गया। सदस्यों ने मां दुर्गा की आराधना दुर्गा सप्तश्लोकी के मंत्रों से करते हुए कुमकुमार्चन के माध्यम से विश्व शांति एवं कल्याण की कामना की। इस अवसर पर पर्यावरणीय जिम्मेदारी को भी केंद्र में रखते हुए महिलाओं ने बढ़ते जल संकट के प्रति सजगता दिखाई और जल संरक्षण एवं जल संवर्धन के लिए शपथ ली।कुमकुमार्चन का प्रारंभ 31 मार्च से बैतूल बाजार नगर में हुआ। इसके अंतर्गत बैतूल नगर के विभिन्न स्थानों पर शंकर नगर स्थित प्राचीन दुर्गा माता मंदिर, भग्गूढाना, पीतांबरा पीठ बड़ोरा, शारदा नगर एवं गौठाना में शक्ति उपासना के कार्यक्रम आयोजित किए गए। यह आयोजन अष्टमी के दिन 5 अप्रैल को समापन तक चला। कार्यक्रम का अंतिम चरण

ग्राम नाहिया (आमला) में मातृशक्ति की आनंदमयी उपस्थिति में संपन्न हुआ, जहां कुमकुमार्चन अभिषेक के साथ कन्या पूजन भी उत्साहपूर्वक किया गया। ग्राम नाहिया में उपस्थित महिलाओं ने जल संकट को गंभीरता से लेते हुए जल संरक्षण हेतु शपथ ली और ग्राम में इस संकट से निपटने के उपायों पर विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर विश्व मांगल्यसभा की जनसंपर्क संयोजक तुलिका पचौरी ने जल संरक्षण विषय पर प्रेरणादायी विचार रखते हुए सभी को जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया। उनके साथ प्रमुख रूप से शामिनी देव, प्राजंलि तलहारकर, प्रमिला धोत्रे, मंजू यादव, रूपाली कमाविस्दार, वर्षा उमप, श्रीराम देव तथा बैतूल बाजार कार्यकारिणी की अन्य सदस्याएं विशेष रूप से उपस्थित रहीं। कार्यक्रम ने धर्म, पर्यावरण और समाज के प्रति चेतना का संदेश देते हुए शक्ति आराधना को सामूहिक सहभागिता से जोड़ने का कार्य किया।

पावर जनरेटिंग कंपनी के तत्वावधान में आयोजित हुआ एचपीवी वैक्सीन जागरूकता शिविर

● 300 किशोरियों को एचपीवी वैक्सीन की दी पहली खुराक

बैतूल। संभागायुक्त केजी तिवारी के मार्गदर्शन एवं बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी द्वारा रविवार को एक विशेष एचपीव्ही वैक्सीन जागरूकता एवं टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर कंपनी की कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य 9 से 14 वर्ष की किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए एचपीवी वैक्सीन की महत्ता से अवगत कराना और उन्हें निशुल्क टीकाकरण की सुविधा प्रदान करना था। शिविर की शुरुआत मुख्य अभियंता श्री व्हीके कैथवार द्वारा दीप प्रज्वलन कर की गई। इसके उपरांत विशेषज्ञ चिकित्सकों ने उपस्थित लोगों को एचपीवी वायरस, इससे होने वाले संक्रमण, स्वास्थ्य जोखिमों और वैक्सीन के लाभों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। चिकित्सकों ने

बताया कि यह वैक्सीन सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए अत्यंत प्रभावशाली एवं सुरक्षित है। शिविर में सारणी संकुल सहित आसपास के लगभग 6 गांवों से आई हुई कुल 300 किशोरियों को एचपीवी वैक्सीन की पहली खुराक दी गई। साथ ही बालिकाओं और उनके अभिभावकों को स्वास्थ्य संबंधी परामर्श, जानकारी पुस्तिकाएँ एवं अन्य आवश्यक सामग्री भी वितरित की गई। इस अवसर पर मुख्य अभियंता श्री वीके कैथवार ने कहा एचपीवी वैक्सीन महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम में एक महत्वपूर्ण कदम है। हमारा उद्देश्य है कि अधिक से अधिक बालिकाओं तक यह सुविधा पहुंचे, ताकि भविष्य में गंभीर बीमारियों से उनका बचाव हो सके। हम समाज के स्वास्थ्य व सुरक्षा के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

इस शिविर का निरीक्षण अनुविभागीय अधिकारी डॉ. अभिजीत सिंह एवं सहायक आयुक्त जनजातीय श्रीमती शिल्पा जैन द्वारा किया गया। उन्होंने शिविर की समग्र व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया और सतपुड़ा ताप विद्युत गृह प्रबंधन द्वारा किए जा रहे इस सकारात्मक सामाजिक प्रयास की सराहना की। कार्यक्रम में स्थानीय नागरिकों, अधिकारियों, स्वास्थ्य कर्मियों एवं बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर का आयोजन मुख्य अभियंता (उत्पादन) सारणी के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर अधीक्षण अभियंता सिविल यूपीस सिकरवार, अधीक्षण अभियंता मुख्यालय श्रीमती ज्योति गायकवाड, उप महाप्रबंधक- मानव संसाधन एवं प्रशासन नरेश पनवार, कार्यपालन अभियंता मुख्यालय संजीव त्रिपाठी, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. विजय रघुवंशी, कार्मिक अधिकारी सुश्री पुष्पलता, विधि अधिकारी श्रीमती भव्यता वाडीवा एवं सहायक अभियंता मुख्यालय कपिल बंसोड, डॉ.विजय कुमार रघुवंशी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

फ्लॉप की कगार पर सलमान की 'सिकंदर'

सलमान खान और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'सिकंदर' का बॉक्स ऑफिस परफॉर्मेंस रिलीज के साथ गिरता जा रहा है। 30 मार्च को रिलीज हुई एक्शन थ्रिलर की कमाई में गिरावट आ रही। कई शहरों में तो थियेटर को दर्शकों का इंतजार है। यही गति रही, तो फिल्म अपना बजट भी नहीं निकाल पाएगी। सलमान खान की इस फिल्म से दर्शकों को काफी उम्मीदें थीं, लेकिन रिलीज के बाद फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह धराशायी हो गई। क्या इसकी वजह कमजोर कहानी थी या फिर फिल्म में कुछ नया न होना?

सलमान खान की एक्शन एंटरटेनर सिकंदर 30 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। फिल्म को दर्शकों की मिली जुली प्रतिक्रिया मिली। एआर मुरुगादॉस की ओर से निर्देशित फिल्म के कलेक्शन में हर दिन के साथ गिरावट देखी जा रही है। दर्शकों का फिल्म में कोई रूचि दिखाई नहीं दे रही। जहां चौथे दिन एक्शन थ्रिलर की कमाई गिरकर 9.75 करोड़ पर आ गई थी. वहीं पांचवें दिन इसकी हालत और टाइट हो गई।

इंडस्ट्री ट्रैकर सैकनिल्क के शुरुआती अनुमानों के अनुसार, सिकंदर ने पांचवें दिन महज 2.52 करोड़ की कमाई की, जो उम्मीद से काफी कम है। फिल्म का टोटल कलेक्शन 86.77 करोड़ हो गया। ओपनिंग डे पर इसने 26 करोड़ कमाए थे। दूसरे, तीसरे और चौथे दिन एक्शन एंटरटेनर का कलेक्शन 29 करोड़, 19.5 और 9.75 करोड़ रहा। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो एक्शन एंटरटेनर का बजट 200 करोड़ रुपये के करीब है। अगर इसी गति में मूवी चलती रही तो या फ्लॉप हो जाएगी।

यह एक्शन मूवी का मुख्य किरदार 'सिकंदर' ऐसा व्यक्ति है, जो भ्रष्टाचार का विरोध करता है और आम लोगों के अधिकारों की रक्षा करता है। फिल्म की सबसे बड़ी कमजोरी इसकी कहानी ही रही। स्क्रिप्ट में कोई नयापन नहीं है और ये दर्शकों को वही घिसी-पिटी कहानी परोसने जैसा था, जिसे वो पहले ही कई बार देख चुके हैं। नायक का संघर्ष, दुश्मनों से बदला लेने की पुरानी कहानी और बिना किसी दमदार ट्विस्ट के, फिल्म एक प्रेडिक्टेबल प्लॉट पर चलती रही।

फिल्म में रश्मिका मंदाना के किरदार से दर्शकों को बहुत उम्मीदें थीं, लेकिन उनका किरदार बेहद छोटा और प्रभावहीन साबित हुआ। फिल्म की शुरुआत में ही उनकी मौत हो जाने से कहानी में वो इमोशनल कनेक्ट नहीं बन सका, जिसकी जरूरत थी। फैंस को उनकी स्क्रीन प्रेजेंस ज्यादा समय तक देखने को नहीं मिली, जिससे वो निराश हो गए।

एक्शन और ड्रामा से भरपूर फिल्में तब तक असरदार नहीं लगती, जब तक उनके डायलॉग दमदार न हों। लेकिन 'सिकंदर' में संवाद बेहद कमजोर और बेजान रहे। एक भी ऐसा डायलॉग नहीं था जो थिएटर में दर्शकों को सीटियां बजाने पर मजबूर कर सके। यही कारण है कि फिल्म इमोशनल और एक्शन दोनों स्तरों पर प्रभावी नहीं हो पाई। फिल्म में कई जगहों पर बेवजह लंबे-लंबे संवाद डाले गए, जो न केवल कहानी की रफ्तार को धीमा कर देते हैं बल्कि दर्शकों को भी उबाऊ लगते हैं। कई सीन्स में किरदारों के बीच चलने वाली लंबी बातचीत ने फिल्म को बोझिल बना दिया और दर्शकों का ध्यान भटक गया।

हाल के सालों में सलमान खान की फिल्मों का पैटर्न लगभग एक जैसा रहा है। 'सिकंदर' भी उसी फॉर्मूले पर बनी फिल्म है, जिसमें मसाला एंटरटेनमेंट, एक्शन, ड्रामा और भावनात्मक पहलू होने का दावा किया गया, लेकिन दर्शकों को इसमें कुछ नया देखने को नहीं मिला। फैंस को लगा कि ये फिल्म सलमान की पिछली फिल्मों की कॉपी मात्र है, जिससे वो जुड़े बिना ही थिएटर से बाहर निकल गए। 'सिकंदर' के फ्लॉप होने के पीछे कई कारण रहे, जिनमें सबसे अहम था कमजोर स्क्रिप्ट और बेजान डायलॉग्स।

फिल्म से फैंस को काफी उम्मीदें थीं, लेकिन ये उन पर खरी नहीं उतर सकी। ये साफ है कि अब दर्शक केवल स्टार पावर पर नहीं, बल्कि दमदार कंटेंट पर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं। सलमान और रश्मिका के अलावा, सत्यराज, प्रतीक स्मिता पाटिल, शरमन जोशी, काजल अग्रवाल और अंजिनी धवन ने एक्शन थ्रिलर में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं। 'सिकंदर' में, रश्मिका मंदाना पहली बार सलमान खान के साथ बड़े पर्दे पर नजर आई। मास्टर स्टोरी टेलर एआर मुरुगादॉस के निर्देशन और साजिद नाडियाडवाला की ओर से प्रमोटेड इस फिल्म में बहुत सी खामियां हैं।

'गदर 2' का रिकॉर्ड तोड़ेगी सनी की 'जाट'

सनी देओल एक बार फिर दमदार अंदाज में बड़े पर्दे पर लौट रहे हैं। उनकी मोस्ट अवेटेड फिल्म 'जाट' 10 अप्रैल को सिनेमाघरों में दस्तक देने जा रही है। फिल्म को पैन-इंडिया स्तर पर रिलीज किया जा रहा है और इसे लेकर दर्शकों में जबरदस्त एक्साइटमेंट देखने को मिल रहा। लेकिन, सबसे बड़ा सवाल ये है कि क्या 'जाट' पहले दिन 'गदर 2' का रिकॉर्ड तोड़ पाएगी! फिल्म मेकर रवि शंकर ने हाल ही में एक बड़ा बयान दिया। उन्होंने बताया कि सनी देओल की स्टार पावर और फिल्म की भव्यता को देखते हुए 'जाट' पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर 20-25 करोड़ रुपए कमा सकती है।

हालांकि, सनी देओल की पिछली ब्लॉकबस्टर 'गदर 2' ने पहले दिन लगभग 40 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। देखना दिलचस्प होगा कि क्या 'जाट' इस रिकॉर्ड को तोड़ पाएगी या नहीं! 'जाट' को महावीर जयंती के खास मौके पर रिलीज किया जा रहा है, जिससे इसे लंबा वीकेंड मिलेगा. ट्रेलर को दर्शकों से शानदार रिस्पॉन्स मिला है, जिसे अब तक 4 मिलियन से ज्यादा बार देखा जा चुका है। इस हाई-ऑक्टेन एक्शन थ्रिलर फिल्म को गोपीचंद मालिनेनी ने डायरेक्ट किया है।

सनी देओल के साथ रणदीप हुड्डा, रेजिना कैसेंड्रा, सयामी खेर और विनीत कुमार सिंह जैसे दमदार कलाकार भी नजर आएंगे। फिल्म में जबरदस्त एक्शन, इमोशनल ड्रामा और थमन एस का दमदार बैकग्राउंड म्यूजिक इसे और भी खास बना रहा है। सनी देओल के फैंस 'जाट' को लेकर बेहद एक्साइटमेंट हैं. इस बार सनी देओल के एक्शन में साउथ सिनेमा का तड़का भी देखने को मिलेगा, जो इसे और भी दिलचस्प बना सकता है। अब देखना यह है कि क्या 'जाट' बॉक्स ऑफिस पर 'गदर 2' जैसा तहलका मचा पाएगी या नहीं!

रियल बॉक्स

फिल्म के कथानक में गीतों की क्या अहमियत

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों में सिर्फ कथानक और अभिनय ही नहीं होता। इसके अलावा भी बहुत कुछ ऐसा होता है, जो कहानी में इस तरह घुल मिल जाता है कि न तो नजर आता है और न समझ आता है। इसलिए कि फिल्मों की दुनिया वास्तव में बड़ी अजीब है। जैसे नमक के बिना खाने के स्वाद की कल्पना करना मुश्किल है, उसी तरह गानों के बगैर फिल्मों के बारे में सोचना भी उतना ही मुश्किल है। कोई फिल्म अपने गानों की वजह से लोकप्रिय हो जाती है, तो कुछ फ़िल्में हिट तो हो जाती है, पर उनके गाने दर्शकों जुबान पर नहीं चढ़ पाते। जहां तक राज कपूर, देव आनंद, शम्मी कपूर, राजेन्द्र कुमार और राजेश खन्ना जैसे सितारों की बात की जाए, तो इन्होने परदे पर गाने गाते हुए झूमकर ही अपनी पहचान बनाई। कुछ फिल्में ऐसी भी हैं, जो केवल एक गाने के कारण बॉक्स ऑफिस पर दर्शकों की भीड़ इकट्ठा करने में कामयाब रही। कभी ये कव्वाली रही, कभी ग़ज़ल तो कभी शादियों में गाए जाने वाले गीत! लेकिन, कुछ ऐसी भी फ़िल्में बनी, जिनमें कोई गाना नहीं था, पर उन्होंने भी सफलता के झंडे गाड़े।

एक गीत की बदौलत बॉक्स ऑफिस पर सिक्कों की बरसात कराने में संगीतकार रवि बेजोड़ रहे। उनकी एक नहीं, कई ऐसी फिल्में हैं, जो केवल एक गाने के कारण दर्शकों ने बार-बार देखी! ऐसी ही फिल्मों में एक है शम्मी कपूर की 'चाइना टाउन' जिसका गीत 'बार बार देखो, हजार बार देखो' तब जितना मशहूर हुआ था, आज भी उतना ही मशहूर है। शादी ब्याह से लेकर पार्टियों में जहां कई नौजवानों को संगीत के साथ थिरकना होता है, इसी गीत की डिमांड होती है। रवि की दूसरी फिल्म है 'आदमी सड़क का' जिसका गीत 'आज मेरे यार की शादी है' बारात का नेशनल एंथम बनकर रह गया है। इसके बिना दूल्हे के दोस्त आगे ही नहीं बढ़ते! इसी तरह दुल्हन की विदाई पर 'नीलकमल' का रचा गीत 'बाबुल की दुआएं लेती जा' ने दर्शकों की आंखें नम तो की, फिल्म की सफलता में भी बहुत योगदान दिया। देखा जाए तो हिंदी फिल्मों का मिजाज बड़ा अजीब है, कभी फिल्में दर्जनों गानों के बावजूद हिट नहीं होती तो कभी बिना गाने और महज एक गाने के दम पर बॉक्स ऑफिस पर सारे कीर्तिमान तोड़ देती है।

रवि ने आरएटी रेट (दिल्ली का ठग), तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा (दस लाख), मेरी छम छम बाजे पायलिया (घूंघट), हुस्न वाले तेरा जवाब नहीं (घराना), हम तो मोहब्बत करेगा (बाम्बे का चोर), ए मेरे दिले नादां तू गम से न घबराना (टावर हाउस), सौ बार जनम लेंगे सौ बार फना होंगे (उस्तादों के उस्ताद), आज की मुलाकात बस इतनी (भरोसा), छू लेने दो नाजुक होंठों को (काजल), मिलती है जिंदगी में मोहब्बत कभी कभी (आंखें), तुझे सूरज कहूँ या चंदा (एक फूल दो माली), दिल के अरमां आंसुओं में बह गए (निकाह) जैसे एक गीत की बदौलत पूरी फिल्म को दर्शनीय बना दिया!

फिल्मों को बॉक्स आफिस पर कामयाबी दिलवाने वाले अकेले गीतों में दिल के टुकडे टुकडे करके मुस्कुरा के चल दिए (दादा), आई एम ए डिस्को डांसर (डिस्को डांसर), बहारों फूल बरसाओ (सूरज), परदेसियों से न अखियां मिलाना (जब जब फूल खिले), चांद आहें भरेगा (फूल बने अंगारे), चांदी की दीवार न तोड़ी (विश्वास), शीशा हो या दिल हो (आशा), यादगार हैं। सत्तर के दशक में एक फिल्म आई थी 'धरती कहे पुकार के' जिसका एक गीत 'हम तुम चोरी से बंधे इक डोरी से' इतना हिट हुआ था कि इसी गाने की बदौलत यह औसत फिल्म सिल्वर जुबली मना गई। इंदौर के अलका थिएटर में तो उस दिनों प्रबंधकों को फिल्म चलाना इसलिए मुश्किल हो गया था कि कॉलेज के छात्र रोज आकर सिनेमाघर में जबरदस्ती घुस आते और इस गाने को देखकर ही जाते थे। कई बार तो ऐसे मौके भी आए जब रील को रिवाइंड करके छात्रों की फरमाइश पूरी करना पड़ी।

हिंदी सिनेमा में एक दौर ऐसा भी आया जब किसी सी-ग्रेड फिल्म की एक कव्वाली ने दर्शकों में गजब का क्रेज बनाया था। इस तरह की फिल्मों में स्टंट फिल्म बनाने वाले फिल्मकार और आज के सफल समीक्षक तरूण आदर्श के पिता बीके आदर्श निर्मित फिल्म 'पुतलीबाई' भी शामिल है। फिल्म की नायिका आदर्श की पत्नी जयमाला थी। इस फिल्म की एक कव्वाली 'ऐसे ऐसे बेशर्म आशिक हैं ये' ने इतनी धूम मचाई थी, कि सी-ग्रेड फिल्म 'पुतलीबाई' ने उस दौरान प्रदर्शित सभी फिल्मों को पछाड़ते हुए सिल्वर जुबली मनाई थी। इसके बाद तो हर दूसरी फिल्म में कव्वाली रखी जाने लगी। 'पुतलीबाई' के बाद एक और फिल्म आई थी नवीन निश्चल, रेखा और प्राण अभिनीत 'धर्मा' जिसमें प्राण और बिंदू पर फिल्माई कव्वाली 'इशारों को अगर समझो राज को राज रहने दो' ने सिनेमा हॉल में जितनी तालियां बटोरी बॉक्स ऑफिस पर उससे ज्यादा सिक्के लूटने में सफलता पाई। इसके बाद कव्वाली का दौर थमा,तो फिल्मकारों ने इससे पीछा छुड़ाकर फिर गजलों पर ध्यान केंद्रित किया। एक गजल से सफल होने वाली फिल्मों में राज बब्बर, डिम्पल और सुरेश ओबेराय की फिल्म 'एतबार' (किसी नजर को तेरा इंतजार आज भी है) और 'नाम' (चिट्ठी आयी है) प्रमुख हैं।

बॉलीवुड के इतिहास में बिना गीतों वाली पहली फिल्म 'कानून' को माना जाता है, जो 1960 आई थी। इसे बीआर चोपड़ा ने निर्देशित किया था। ये फिल्म कानूनी पैचीदगियों के बीच से एक वकील के दांव-पेंच की कहानी थी, जो हत्यारे को बचा लेता है। इसमें सवाल उठाया गया था कि क्या एक ही अपराध में किसी व्यक्ति को दो बार सजा दी जा सकती है? ये फिल्म इसी सवाल का जवाब ढूंढती है। इस फिल्म में अशोक कुमार ने एक वकील का किरदार निभाया था। बगैर गीतों वाली दूसरी फिल्म थी 'इत्तेफ़ाक़' जिसे 1969 में यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था। राजेश खन्ना और नंदा ने इसमें मुख्य भूमिकाएं निभाई थी। यह फिल्म एक रात की कहानी है, जिसमें दर्शक बंधा रहता है। गीतों के बिना भी ये फिल्म पसंद की गई थी। यह फिल्म हत्या से जुड़े एक रहस्य पर आधारित थी, यही कारण था कि दर्शको को फिल्म में गीत न होना खला नहीं।

बरसों बाद श्याम बेनेगल ने 1981 में 'कलयुग' बनाकर इस परम्परा की याद दिलाई थी। इसमें शशि कपूर, राज बब्बर और रेखा मुख्य भूमिकाओं में थे। महाभारत से प्रेरित इस फिल्म में दो व्यावसायिक घरानों की दुश्मनी को नए संदर्भों में फिल्माया गया था। बदले की कहानी पर बनी इस फिल्म में कोई गाना न होने के बावजूद इसे पसंद किया गया था। इसे 'फिल्म फेयर' का सर्वश्रेष्ठ फिल्म (1982) का पुरस्कार भी मिला। इसके अगले साल 1983 में आई कुंदन शाह की कॉमेडी फिल्म 'जाने भी दो यारो' आई जिसमें नसीरुद्दीन शाह, रवि वासवानी, ओमपुरी और सतीश थे। ये एक मर्डर मिस्ट्री थी, जिसने व्यवस्था पर भी करारा व्यंग्य किया था।

बिना गीतों की फिल्म की सबसे बड़ी खासियत होती है पटकथा का कसा होना। यदि फिल्म की कहानी इतनी रोचक है कि वो दर्शकों को बांधकर रख सकती है, तो फिर गीतों का न होना कोई मायने नहीं रखता! इस तरह की अगली फिल्म 1999 में रामगोपाल वर्मा की आई। ये रोमांचक कहानी वाली फिल्म थी 'कौन है!' इसमें मनोज बाजपेयी, सुशांत सिंह और उर्मिला मातोंडकर ने काम किया था। इस फिल्म की पटकथा इतनी रोचक थी, कि दर्शकों को हिलने तक का मौका नहीं मिला था। 2005 में आई संजय लीला भंसाली की फिल्म 'ब्लैक' जिसने भी देखी, उसे पता भी नहीं चला होगा कि फिल्म में कोई गीत नहीं था। अमिताभ बच्चन और रानी मुखर्जी की ये फिल्म एक अंधी और बहरी लड़की और उसके टीचर की कहानी थी। इस फिल्म को कई अवॉर्ड्स भी मिले थे।

इसके अलावा बिना गीतों वाली कुछ और उल्लेखनीय फिल्मों में 2003 में रिलीज हुई 'भूत' थी, जिसका निर्देशन राम गोपाल वर्मा ने किया था। इस फिल्म में अजय देवगन, फरदीन खान, उर्मिला मातोंडकर और रेखा थे। ये डरावनी फ़िल्म थी और इसमें एक भी गीत नहीं था। इसी साल आई फिल्म 'डरना मना है' में सैफ अली खान, शिल्पा शेट्टी, नाना पाटेकर और सोहेल खान थे। इस फिल्म में भी कोई गीत नहीं था, फिर भी यह हिट हुई। 2008 में आई 'ए वेडनेसडे' अपनी कहानी के नयेपन की वजह से सुर्खियों रही थी। फिल्म में एक आम आदमी की कहानी थी, जो व्यवस्था से परेशान होकर खुद उससे टक्कर लेता है। 2013 की फिल्म 'द लंचबॉक्स' दो अंजान अधेड़ प्रेमियों की कहानी थी, जो लंच बॉक्स जरिए प्रेम पत्रों का आदान-प्रदान करते हैं। इस फ़िल्म में इरफान खान ने बहुत अच्छी एक्टिंग की थी। ऐसी ही कॉमेडी फिल्म 'भेजा फ्राई' 2007 में आई थी। लेकिन, कमजोर कहानी वाली इस फिल्म को पसंद नहीं किया गया। इसमें विनय पाठक, रजत कपूर और मिलिंद सोमन थे।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

चला गया भारत की बात सुनाने वाला मनोज कुमार

अशोक जोशी

सिनेमा के पर्दे पर भारत की उज्जवल छवि पेश कर देश को सपेरों और साधुओं के देश का ठप्पा मिटाने में मनोज कुमार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इससे पहले जितने फिल्मकार जिन्हें दिग्गज फिल्मकार

होने की पदवी मिली थी उन्होंने भारत की एक गरीब और गंदी तस्वीर पेश की थी। आज जब कुछ लोग भारत की छवि को फिर से बदनाम करने की साजिश में लगे हैं, तब मनोज कुमार जैसे फिल्मकार की जरूरत थी। लेकिन, अफसोस! इस जरूरत के समय ही सिनेमा जैसे सशक्त माध्यम से मुंह चुराकर परदे के भारत कुमार मनोज कसमे वादे प्यार वफा सब को छोड़कर 87 साल की उम्र में इस संसार से रुखसत हो गए।

भारत कुमार के नाम से चर्चित मनोज कुमार को न केवल देशभक्तिपूर्ण फिल्में बनाने में महारत हासिल थी। वे सैल्यूलाइड पर फिल्मी मसालों का इतना बेहतरीन घाल-मेल करते थे कि सिनेमा की पुरानी मान्यताएं ताक पर धरी रह जाती। फिल्म पट्टिका पर एक नयी इबारत लिखी जाती जिसे देख-पढकर दर्शक अपनी फिल्मी मान्यताएं बदलने को मजबूर हो जाते थे। लेकिन, पिछले कुछ सालों से वह सक्रिय नहीं थे। लेकिन, उनके मन में यह ललक जिंदा थी कि वे फिर से अपने पुराने अंदाज में लौटे और सेल्यूलाइड के माध्यम से देश सेवा करें। लेकिन यह इच्छा अधूरी ही रह गई।

राम शर्मा की फिल्म 'शहीद' की सफलता ने मनोज कुमार को एक नया मंत्र दे दिया और वह देशभक्ति की चासनी में पकी फिल्में पेश करते हुए कब मनोज कुमार से भारत कुमार बन गए पता नहीं चला। 'उपकार' के बाद तो मनोज कुमार देश की समस्याओं और देशभक्ति के मसाले से तरह तरह की चटपटी फिल्में बनाकर दर्शकों को परोसते रहे। 'उपकार' में जहां उन्होंने जय जवान-जय जवान को भुनवाया वहीं यादगार में भ्रष्टाचार के खिलाफ इकतारा बजाकर दर्शकों से जुड़ गए। 'पूरब और पश्चिम' में भारतीय संस्कृति को उन्होंने पश्चिमी संस्कृति से बेहतर बताने की सफल कोशिश की तो पहचान में गांव और शहर की संस्कृति से दर्शकों को परिचित कराया। बेइमान भ्रष्टाचार पर आधारित थी तो 'सन्यासी' में उन्होंने तथाकथित बाबाओं की पोल खोली। 'रोटी कपड़ा और मकान' की समस्याएं तो उसके शीर्षक से पता चलती है तो 'क्लर्क' में उन्होंने बेरोजगारी से रूबरू कराया। कहने को तो 'क्रांति' स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित थी, लेकिन यह पूरी तरह से मनोज कुमार की नहीं बल्कि सलीम-जावेद की खिचड़ी थी। 'शोर' में प्रदूषण और स्लम की समस्याओं का सुरीला संगम था।

मनोज कुमार की तमाम खूबियों में एक खूबी यह भी थी कि उन्हें फिल्मी मान्यताएं बदलने की कला बखूबी आती थी। फिल्म 'शहीद' में प्राण के अंदाज को बारीकी से पढते हुए 'उपकार' में उन्होंने प्राण का खलनायक वाला चोला उतार कर एक नेक इंसान को चोला पहना दिया। उनके इस कदम से पूरी बॉलीवुड के समंदर में सैलाब आ गया । कोई सोच भी नहीं सकता था कि खलनायकी का यह शहंशाह जिसे दर्शक थू-थू करते थे, कसमें वादे प्यार वफा गाकर दर्शकों का इतना प्यार बटोर लेगा। मनोज कुमार ने प्राण से यह सब करवा कर नौ सौ चूहे खाकर चुहिया को वाकई हाजी बना दिया। यहां मनोज कुमार ने चतुराई से काम लिया जिसे अनदेखा ही कर दिया गया। उपकार में प्राण का मलंग वाला किरदार था तो नेक इंसान का, लेकिन उनके अंदाज में वही खलनायक वाला खुरदुरापन था। इस तरह मनोज कुमार करेले पर चाशनी चढ़ाने में कामयाब हो गए। आगे भी उन्होने मान्यताएं बदलने का काम जारी रखा।

'पूरब और पश्चिम' में उन्होने मदन पुरी के साथ यह फार्मूला अपनाया। घाघ और स्वार्थी इंसान की भूमिका के लिए बदनाम मदनपुरी को मनोज कुमार ने विदेशी में बसे एक असहाय बाप के रूप में इतनी सहजता से पेश किया कि उनका रंग ही बदल गया। प्राण और मदन पुरी के अलावा प्रेमनाथ से भी उन्होंने 'शोर' में दबंग और दयावान पठान की भूमिका करवाकर उनका कायाकल्प कर दिया। इसी तरह प्रेम चोपड़ा, जोगिंदर और मनमोहन की इमेज को बदलने में भी मनोज कुमार कामयाब रहे। वे पहले फिल्मकार थे, जिन्होने पाकिस्तानी कलाकारों को हिंदी फिल्मों में मौका दिया था।

यह सब करते हुए मनोज कुमार इतने विश्वसनीय हो गए कि उनकी फिल्म में वह जो भी प्रयोग करते, सहयोगी कलाकार आंख मूंद वह सब करते जाते। इस विश्वसनीयता का फायदा उठाते हुए मनोज कुमार ने देशभक्ति का मुलम्मा चढ़ाते हुए अपनी फिल्मों में वह सब शामिल कर लिया, जो आमतौर पर मुश्किल होता है। यह मनोज कुमार ही थे जिन्होंने 'रोटी कपडा और मकान' में हाय हाय रे यह मजबूरी में जीनत अमान को जी भरकर भिगोया, तो आटे की बोरियों और तराजू के पलड़ों पर मौसमी के रेप सीन को लसलसे तरीके से फिल्माकर दर्शकों की सांसों को गर्म किया। यह मनोज कुमार ही थे, जिन्होंने इसी फार्मूले को अपनाते हुए 'पूरब पश्चिम' में सायरा को ग्लैमर में ढालकर, 'यादगार' में नूतन जैसी पारिवारिक अभिनेत्री को स्विमिंग सूट पहनाकर और 'क्रांति' में हेमा मालिनी जैसी सात्विक समझी जाने वाली नायिका को न केवल पानी में तरबतर किया, बल्कि चतुराई से उनके मादक शरीर को परोसकर बॉक्स ऑफिस पर सिक्के बरसवा लिए। बावजूद उनकी फिल्मों में देशभक्ति का जज्बा जरा भी कम नहीं हुआ।

ऐसी बात नहीं कि मनोज कुमार ने देश भक्ति और उसकी आड में केवल अंग प्रदर्शन से सफलता बटोरी। फिल्मों के तकनीकी पक्ष , कैमरा और फाइटिंग सीन में भी उनकी जबरदस्त पकड़ थी। 'उपकार' और 'शोर' की फाइटिंग सिक्वेंस एकदम वास्तविक लगती है। 'शोर' में झूले का प्रयोग और बिजली की लुकाछिपी इसके अद्भुत थी। 'पूरब पश्चिम' की पहली कुछ ब्लैक एंड व्हाइट रीलें और ब्रिटिश सरकार यूनियन जैक के उतरते ही तिरंगे के चढने के साथ फिल्म का कलर में बदलना ऐसा प्रयोग है जिसे उस समय करना तो दूर सोचना तक मुश्किल था। भाई की असफलता ,पिता की मौत और पारिवारिक विवाद से तंग आकर मनोज कुमार ने शराब में डूबकर अपना तो बड़ा नुकसान किया लेकिन उन दर्शकों का भी भारी नुकसान किया जो आज के परिप्रेक्ष्य में देश की समस्याओं का कुछ सार्थक समाधान ढूंढने के लिए सिनेमाघर का अंधेरा कौना तलाशते नजर आते हैं।

राजनीति से भी मनोज कुमार का चोली दामन का साथ था। अपने आरंभिक जीवन में वह कांग्रेसी विचारधारा के समर्थक थे। लाल बहादुर शास्त्री उनके आदर्श थे। उनकी सास कांग्रेस की सांसद भी रह चुकी थी। लेकिन बाद में वैचारिक मतभेद के चलते उन्होने भारतीय जनता पार्टी को समर्थन देना आरंभ कर दिया था। फिल्मों में नाम और दाम कमाने के अलावा उन्हें पद्म विभूषण और दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

आज देश जिस दौर से गुजर रहा है, उसकी अच्छी बुरी प्रतिक्रिया लगभग सभी माध्यमों में हो रही है। ऐसे समय यदि मनोज कुमार पहले की तरह सक्रिय होते तो निश्चित ही सैल्यूलाइड पर ताजा हालातों को ऐसे अंदाज में पेश किया जाता जिसे देखकर दर्शक न केवल तालियां पीटते बल्कि देश उन्हें राष्ट्रीय समस्याओं का एक फिल्मी हल भी मिल जाता। लेकिन, आखिर में लंबी बीमारी से जूझते हुए मनोज कुमार फिल्मी दुनिया ही नहीं इस दुनिया को भी अलविदा कर चले गए। हो सकता है वह ऊपर जाकर अपना यह परिचय दें कि भारत का रहने वाला हूं भारत की बात सुनाता हूं।

॥ जगनिवास प्रभु प्रकटे अखिल लोक बिश्राम.... ॥

जन-जन की प्राण शक्ति
धर्म और न्याय के रक्षक मर्यादा पुरुषोत्तम
भगवान श्रीराम के अवतरण दिवस

श्रीराम नवमी

के पावन पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मैहर
मां शारदा पूजन
विकास कार्यों का
भूमिपूजन एवं शिलान्यास
अपराह्न 1:00 बजे

चित्रकूट
गौरव दिवस कार्यक्रम
गंगा आरती एवं दीपोत्सव
सायं 5:30 बजे

गरिमामयी उपस्थिति
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव
6 अप्रैल 2025

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अभ्युदय के पथ पर बढ़ता
धार्मिक पर्यटन को समृद्ध करता **मध्यप्रदेश**

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी D-11001/25 सीधा प्रसारण @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP